



BCOC- 138
लागत लेखांकन



प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

कार्यक्रम डिजाइन समिति – बी.कॉम (सी.बी.सी.एस.)

<p>प्रो. मधु त्यागी निर्देशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू</p> <p>प्रो. आर.पी. हुडा पूर्व कुलपति, एम.डी. विश्वविद्यालय, रोहतक</p> <p>प्रो. बी. आर. अनंथन रानी चेन्नमं विश्वविद्यालय, बेलगाँव, कर्नाटक</p> <p>प्रो. आई. वी. त्रिवेदी पूर्व कुलपति, एम.एल. सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर</p> <p>प्रो. पुरुषोत्तम राव (सेवानिवृत्त) वाणिज्य संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद</p>	<p>प्रो. डी. पी. एस. वर्मा (सेवानिवृत्त) वाणिज्य संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली</p> <p>प्रो. के. वी. भानुमूर्ति (सेवानिवृत्त) वाणिज्य विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली</p> <p>प्रो. कविता शर्मा वाणिज्य विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली</p> <p>प्रो. खुशीद अहमद बट डीन, वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर</p> <p>प्रो. डेबब्रत मित्रा वाणिज्य संकाय, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, दार्जिलिंग</p>	<p>प्रो. आर. के. ग्रोवर (सेवानिवृत्त) प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू</p> <p>संकाय सदस्य एस.ओ.एम.एस. इग्नू</p> <p>प्रो. एन.वी. नरसिंहम प्रो. नवल किशोर प्रो. एम.एस.एस. राजू प्रो. सुनील कुमार डॉ. सुबोध केसरवानी डॉ. रश्मि बंसल डॉ. मधुलिका पी. सरकार डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय</p>
पाठ्यक्रम डिजाइन समिति और निर्माण दल		
<p>प्रो. मधु त्यागी निर्देशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू</p> <p>प्रो. आर. के. ग्रोवर (सेवानिवृत्त) प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू</p> <p>प्रो. सी. एल. त्यागी (सेवानिवृत्त) दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली</p>	<p>डॉ. लक्ष्मण पालीवाल वाणिज्य विभाग दिल्ली टेक्नोलॉजिकल विश्वविद्यालय</p> <p>डॉ. रितेश सक्सेना सी.एम.ई., ए.आई.एम.ए., नई दिल्ली</p> <p>डॉ. सुधांशु शर्मा एस.ओ.सी.आई.एस. इग्नू</p> <p>डॉ. अरविंद कुमार दूबे एस.ओ.टी.एच.एस.एम. इग्नू</p> <p>प्रो. एम.एस.एस. राजू (संपादक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक)</p> <p>सम्पादन और प्रूफ रीडिंग (अंग्रेजी और हिन्दी) डॉ. रश्मि बंसल प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू</p>	<p>संकाय सदस्य एस.ओ.एम.एस. इग्नू</p> <p>प्रो. एन.वी. नरसिंहम प्रो. नवल किशोर प्रो. एम.एस.एस. राजू प्रो. सुनील कुमार डॉ. सुबोध केसरवानी डॉ. रश्मि बंसल डॉ. मधुलिका पी. सरकार डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय</p> <p>पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. एम.एस.एस. राजू (अंग्रेजी) प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू</p> <p>डॉ. रश्मि बंसल (हिन्दी) प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू</p> <p>अनुवाद डॉ. रश्मि बंसल (हिन्दी) प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू (इकाई 16-18)</p>
पाठ्यक्रम निर्माण दल		

सामग्री निर्माण

श्री वाई. एन. शर्मा
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

जनवरी 2021

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN :

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिनियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर्स, सी 206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली

मुद्रक :

विषय वस्तु

आधारभूत सिद्धान्त

- इकाई 1: लागत लेखांकन की प्रकृति और विषय-क्षेत्र
इकाई 2: लागत की संकल्पना तथा उसका परिकलन

सामग्री और श्रम

- इकाई 3: क्रय, भंडारण और निर्गमन
इकाई 4: स्टॉक नियंत्रण
इकाई 5: निर्गमित सामग्री का मूल्य निर्धारण
इकाई 6: श्रम – आधारभूत सिद्धान्त
इकाई 7: श्रमिक लेखांकन

उपरिव्यय

- इकाई 8 : उपरिव्ययों का वर्गीकरण और वितरण
इकाई 9: फैक्ट्री उपरिव्ययों का अवशोषण
इकाई 10: मशीन घंटा दर
इकाई 11: अन्य उपरिव्ययों का लागत लेखांकन और कार्य-आधारित लागत आवंटन

लागत-निर्धारण विधियां

- इकाई 12: इकाई लागत निर्धारण
इकाई 13: जॉब लागत निर्धारण
इकाई 14: ठेका कार्य लागत-निर्धारण
इकाई 15: प्रक्रिया लागत निर्धारण
इकाई 16: संयुक्त-उत्पाद ओर उपोत्पाद
इकाई 17: अर्ध-निर्मित माल का मूल्यांकन
इकाई 18: सेवा लागत-निर्धारण
इकाई 19: लागत और वित्तीय लेखों का समाधान

BCOC-138 लागत लेखांकन

आप जानते हैं कि लेखांकन प्रबंधन का एक आवश्यक पहलू है। इसका कारण यह है कि लेखांकन में उत्पादन और व्यापार से सम्बंधित अनेक बहुमूल्य सूचनाएं सम्मिलित होती हैं जिसके आधार पर प्रबंधन अनेक आवश्यक निर्णय लेता है।

वित्तीय लेखांकन (BCOC-131) बी.काम. का एक मूलभूत पाठ्यक्रम है जिसका आपने विस्तृत रूप से अध्ययन किया है, व्यापार में प्रत्येक दिन के लेन-देन से सम्बंधित आंकड़ों को दर्ज करने के लिए जिम्मेवार है। इसकी सहायता से वित्तीय ब्यौरा जैसे लाभ-हानि लेखा और बैलेंस शीट तैयार की जाती हैं। परन्तु यह विभिन्न उत्पादों, सेवाओं, कार्यों और प्रक्रियाओं के बारे में, जिनकी व्यापारिक गतिविधियों की योजना बनाने और नियंत्रण करने में महत्वपूर्ण भूमिका है, विस्तृत जानकारी प्रदान नहीं करता है। इसके लिए लेखांकन की एक विशिष्ट प्रणाली "लागत लेखांकन" का उपयोग किया जाता है जिसमें आमदनी और व्ययों से सम्बंधित लेखांकन विधियां और नियतकालीन ब्यौरे और रिपोर्ट तैयार करने की विधियां सम्मिलित हैं। जिनका उद्देश्य लागतों को ज्ञात करना और नियंत्रित करना होता है। इस पाठ्यक्रम में 19 इकाईयां हैं। इकाईयों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

आधारभूत सिद्धान्त

इकाई 1 : लागत लेखांकन की प्रकृति और विषय-क्षेत्र : लेखांकन की आवश्यकता, वित्तीय लेखांकन की सीमाओं, लागत और वित्तीय लेखांकन के मध्य अन्तर और लेखा-निर्धारण प्रणाली को स्थापित करने की विधि का विवरण प्रस्तुत करती है।

इकाई 2 : लागत की संकल्पना तथा उसका परिकलन: लागत को निर्धारित करने की परिकल्पना को स्पष्ट करती है और लागत के विभिन्न अवयवों का विवरण देती है। इसमें लागत शीट का नमूना दिया गया है और कुल लागत की विधियों के विभिन्न अवयवों और लागत-निर्धारण के प्रकारों को स्पष्ट किया गया है। अन्त में इसमें लागत-लेखाकार की भूमिका और उसकी जिम्मेवारियों का विवरण दिया गया है।

सामग्री और श्रम

इकाई 3 : क्रय, भंडारण और निर्गमन इस इकाई में क्रय भंडारण और सामग्री के निर्गमन और इसके नियंत्रण का विवरण दिया गया है।

इकाई 4: स्टॉक नियंत्रण : यह स्टॉक नियंत्रण का अर्थ और उसके उद्देश्यों को स्पष्ट करती है। यह स्टॉक नियंत्रण की विभिन्न तकनीकों का विवरण देती है।

इकाई 5: निर्गमित सामग्री का मूल्य निर्धारण : सामग्री का मूल्य ज्ञात करने और निर्गमित सामग्री का मूल्य निर्धारित करने की विभिन्न विधियों को स्पष्ट करती है। इसमें भंडारण खाता-बही तैयार करने की विधि का विवरण भी दिया गया है।

इकाई 6 : श्रम – आधारभूत सिद्धान्त: श्रम से सम्बंधित है, और टाइम कीपिंग, टाइम बुकिंग, वेतन-भुगतान लेखांकन निष्कार्य समय के नियंत्रण और श्रम की मात्रा को स्पष्ट करती है।

इकाई 7 : श्रमिक का लेखांकन : मजदूरी भुगतान की विभिन्न विधियों और प्रोत्साहन योजनाओं को लेखांकन प्रक्रिया सहित स्पष्ट करती है।

उपरिव्यय

इकाई 8 : उपरिव्ययों का वर्गीकरण और वितरण : उपरिव्ययों के वर्गीकरण से सम्बंधित है और उत्पादन उपरिव्यय (फैक्ट्री) की प्रथम तीन अवस्थाओं—संग्रहण, आवंटन और नियुक्ति का विवरण प्रस्तुत करती है।

इकाई 9 : फैक्ट्री उपरिव्ययों का अवशोषण: वितरण की अंतिम अवस्था – फैक्ट्री उपरिव्ययों के अवशोषण की विभिन्न विधियों का विवरण प्रस्तुत करती है।

इकाई 10 : मशीन घंटा दर : मशीन घंटा दर की गणना स्पष्ट करती है।

इकाई 11: अन्य उपरिव्ययों का लागत लेखांकन और कार्य-आधारित लागत आवंटन उपरिव्ययों के वितरण, प्रबंधन और बिक्री से सम्बंधित उपरिव्ययों को स्पष्ट करती है। यह लागत लेखा में उपरिव्ययों के कुछ विशिष्ट मदों को भी स्पष्ट करती है और गतिविधि आधारित लागत आवंटन का संक्षिप्त विवरण भी देती है।

लागत-निर्धारण की विधियां

इकाई 12 :इकाई लागत निर्धारण: इसमें प्रति इकाई लागत निर्धारण विधियां स्पष्ट की गयी है जिसका उपयोग किसी उत्पाद की लागत और लाभ ज्ञात करने के लिए लागत शीट तैयार कर किया जाता है।

इकाई 13 : जॉब लागत निर्धारण: इस इकाई में जॉब लागत-निर्धारण का विवरण है। यह किसी जॉब की लागत निश्चित करने के लिए प्रयुक्त तकनीकों को स्पष्ट करती है।

इकाई 14 : ठेका कार्य लागत-निर्धारण: इस इकाई में ठेका कार्य लागत-निर्धारण विधि स्पष्ट की गई है। इसमें अपूर्ण ठेका कार्यों पर लाभ-ज्ञात करने की विधि का विवरण दिया गया है।

इकाई 15 : प्रक्रिया लागत निर्धारण : इस इकाई में प्रक्रिया लागत-निर्धारण की व्याख्या की गई है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार उत्पाद की प्रत्येक प्रक्रिया के लिये निर्धारित की जाती है और किस प्रकार सामान्य और असामान्य प्रक्रिया हानियों को लागत लेखांकन में समायोजित किया जाता है।

इकाई 16 : संयुक्त-उत्पाद ओर उपोत्पाद : इस इकाई में की लेखांकन विधियों का ब्यौरा दिया गया है। इसमें चालू-कार्य के मूल्यांकन की प्रक्रिया स्पष्ट की गई है।

इकाई 17 : अर्ध-निर्मित माल का मूल्यांकन : इसमें चालू-कार्य के मूल्यांकन की प्रक्रिया स्पष्ट की गई है।

इकाई 18 : सेवा लागत-निर्धारण : इस इकाई में सेवा लागत-निर्धारण की आवश्यकता स्पष्ट की गई है। इसके अतिरिक्त केवल परिवहन से सम्बंधित सेवा लागत-निर्धारण की गणना विधि का विवरण दिया गया है।

इकाई 19 : लागत और वित्तीय लेखों का समाधान: इस इकाई में लागत और वित्तीय लेखों का समाधान स्पष्ट किया गया है। इसमें लागत लेखा द्वारा प्रदर्शित लाभ और वित्तीय लेखा द्वारा प्रदर्शित लाभ के समाधान की विधियों और उसकी आवश्यकता की व्याख्या की गई है।

इकाई की रूपरेखा

- 1.0 उद्देश्य
- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 लागत लेखा की आवश्यकता
 - 1.2.1 वित्तीय लेखांकन की सीमाएं
 - 1.2.2 लागत लेखा और अर्थव्यवस्था
- 1.3 लागत निर्धारण और लागत लेखांकन की परिभाषाएं
- 1.4 लागत लेखांकन के उद्देश्य
- 1.5 लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में अन्तर
- 1.6 लागत लेखांकन के लाभ
- 1.7 लागत लेखा प्रणाली की स्थापना
 - 1.7.1 संभावित कठिनाइयां
 - 1.7.2 ध्यान देने योग्य बातें
 - 1.7.3 प्रणाली की सफलता
- 1.8 सारांश
- 1.9 शब्दावली
- 1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
- 1.11 स्वपरख प्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- आधुनिक अर्थ व्यवस्था में लागत लेखा की आवश्यकता का वर्णन कर सकें,
- लागत निर्धारण और लागत लेखांकन की परिभाषा कर सकें,
- लागत लेखा के उद्देश्यों का उल्लेख कर सकें,
- लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में भेद कर सकें,
- लागत लेखा का महत्त्व स्पष्ट कर सकें, तथा
- लागत लेखा प्रणाली की स्थापना संबंधी महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख कर सकें।

1.1 प्रस्तावना

आप जानते हैं कि लागत लेखांकन, लेखांकन की एक विशिष्ट शाखा है। इसका सम्बन्ध व्यय के वर्गीकरण, लेखन और उचित आबंटन से होता है जिससे कि उत्पाद व सेवाओं की लागत तथा लाभकारिता निर्धारित की जा सके। इसके अन्तर्गत लागतों को नियंत्रित करने और प्रबंधकीय निर्णय लेने के उद्देश्य से आवधिक विवरण और रिपोर्ट तैयार करना भी आता है। इस इकाई में हम आपको लागत लेखा की प्रकृति और क्षेत्र से परिचित करायेंगे तथा लागत लेखा की आवश्यकता, इसकी

परिभाषा और उद्देश्यों, लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में अन्तर, लागत लेखांकन के लाभ और किसी संगठन में लागत निर्धारण प्रणाली की स्थापना पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1.2 लागत लेखा की आवश्यकता

प्रत्येक आर्थिक क्रिया खास तौर से वह क्रिया जो वस्तुओं के निर्माण या सेवाएं प्रदान करने से सम्बन्धित हो, में कुछ व्यय होता है। यह व्यय सामग्री, श्रम और अन्य प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष व्यय के रूप में हो सकता है। एक व्यापारिक उद्यम में ऐसी क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य लाभअर्जित करना है। अतः लेन देन के तीनों तत्वों (यानि लागत, लाभ और कीमत) को स्पष्ट रूप से जानना आवश्यक है।

उदाहरण के लिये एक जूता बनाने वाले कारखाने ने खेल-कूद के लिये एक नये प्रकार का जूता बनाना शुरू किया। फ़ैक्टरी द्वारा बनाये गये और बाजार में सप्लाई किये गये जूते की प्रत्येक जोड़ी पर 20 रु. सामग्री पर, 30 रु. श्रम पर और 25 रु. अन्य खर्च (ऊपरिव्यय) करना पड़ा। जूते की प्रत्येक जोड़ी की कीमत 100 रु. निश्चित की गयी इस प्रकार एक जोड़ी जूते की लागत 75 रु. (20 + 30 + 25) है, इसका विक्रय मूल्य 100 रु. है और प्रत्येक जोड़ी जूते पर 25 रु. (100 - 75) लाभ है। प्रबंध को नियोजन, लागत नियंत्रण और निर्णय लेने के लिये प्रत्येक निर्मित उत्पाद के बारे में ऐसी सूचना की आवश्यकता है। लेकिन वित्तीय लेखांकन के अन्तर्गत रखे जाने वाले रिकार्ड ऐसी आवश्यक जानकारी प्रदान करने में असफल होते हैं। अतः लेखापालों ने लेखांकन की एक नयी प्रणाली का विकास किया जिसे 'लागत लेखांकन' (Cost Accounting) कहते हैं और इसके अन्तर्गत लेन-देनों के रिकार्ड इस प्रकार रखे जाते हैं कि प्रत्येक उत्पाद, कार्य, विभाग, प्रक्रिया आदि के बारे में लागत की विस्तृत जानकारी तुरन्त उपलब्ध होती है। वास्तव में, वित्तीय लेखांकन की कमियों और सीमाओं के कारण लागत लेखांकन की आवश्यकता पड़ी।

1.2.1 वित्तीय लेखांकन की सीमाएं

- 1 यह संगठन के प्रत्येक विभाग, प्रक्रिया, उत्पाद या अन्य क्रिया के बारे में विस्तृत प्रचालन जानकारी प्रदान नहीं करता। यह पूरे उद्यम के लिये केवल आय, व्यय, परिसम्पत्तियों और देयताओं की जानकारी प्रदान करता है।
- 2 यह व्यय को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष या स्थिर और परिवर्तनशील भागों में वर्गीकृत नहीं करता। लागतों को उत्पादों के उत्पादन के प्रत्येक चरण में आबंटित नहीं किया जाता जो नियंत्रणीय और अनियंत्रणीय मदों को दिखा सके।
- 3 यह लागतों के मुख्य तत्वों यानि सामग्री और श्रम पर नियंत्रण की एक उचित प्रणाली स्थापित नहीं करता। अतः सामग्री की क्षति और हानियां बिना जंचे रह जाती हैं और श्रम के समय का उपयोग अनियंत्रित रह जाता है।
- 4 यह ऐसे मानक (standards) और प्रतिमान (norms) स्थापित नहीं करता जिनसे लागत की विभिन्न मदों की तुलना की जा सके।
- 5 यह संगठन द्वारा निर्मित विभिन्न उत्पादों या उसके द्वारा प्रदान की गयी सेवाओं के विक्रय मूल्य के निर्धारण के लिये लागत की पर्याप्त जानकारी प्रदान नहीं करता।
- 6 इसमें लागत के बारे में ऐतिहासिक जानकारी होती है जो लेखांकन वर्ष के अन्त में

संकलित की जाती है। अतः समय-समय पर लागत-आंकड़ों को एकत्र करना कठिन हो जाता है।

- 7 क्योंकि वित्तीय लेखांकन से उत्पाद अनुसार लागत और लाभ सम्बन्धित सूचना नहीं मिलती, इसलिये लाभ या हानि के कारणों का प्रभावी तरीके से विश्लेषण नहीं किया जा सकता। वित्तीय लेखे अधिक से अधिक एक थर्मामीटर की भांति हैं जो शरीर का केवल तापमान दर्शा सकता है लेकिन उसके स्वास्थ्य का विश्लेषण या निदान करने में सहायक नहीं हो सकता।

1.2.2 लागत लेखा और अर्थव्यवस्था

आइये अब एक अधिक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में लागत लेखा की आवश्यकता का विश्लेषण करें। आधुनिक अर्थव्यवस्था की कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो लागत निर्धारण की आवश्यकता को और अधिक स्थापित करती हैं। ये संक्षेप में निम्नलिखित हैं :

- 1 **व्यापक प्रतिस्पर्धा:** आन्तरिक और बाह्य बाजारों में प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ती जा रही है। इस चुनौती का केवल वही उत्पादक सामना कर सकते हैं जो लागतों पर कड़ा नियंत्रण रखते हों और सही कीमत निर्धारण नीतियों का पालन करते हों।
- 2 **सीमित साधन:** साधनों का बहुत अधिक अभाव है और ऐसी स्थिति में क्षति और हानियों को कम करके इनके प्रभावी और मितव्ययी उपयोग की अपेक्षा की जाती है।
- 3 **जटिल प्रबंध:** औद्योगिक संगठनों का प्रबंध बहुत ही जटिल प्रक्रम बन गया है जो उत्पादन के प्रत्येक क्षेत्र में और क्रिया के प्रत्येक चरण पर ध्यान देने और कार्य करने की मांग करता है।
- 4 **शीघ्र निर्णय:** विश्वसनीय आंकड़ों द्वारा समर्थित पर्याप्त सूचना के आधार पर सही और शीघ्र निर्णयों की आवश्यकता होती है।
- 5 **विशेष जिम्मेवारी:** उपयुक्त किस्म, उचित कीमतों और नियमित सप्लाई आदि के रूप में प्रत्येक व्यापार एक बड़ी सामाजिक जिम्मेवारी का सहभागी है।
- 6 **अनुकूलतम लाभ:** प्रत्येक व्यवसाय का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है और जो मुख्य रूप से वित्तीय, कार्मिक, उत्पादन और विपणन क्रियाओं के कुशल निष्पादनपर आधारित होता है।

यदि हम ऊपर दिये गये कारकों के बीच सम्बन्ध स्थापित करें तो विभिन्न कारकों के बीच सम्बन्ध का आधार केवल लागत लेखा ही प्रतीत होती है और व्यापारिक सफलता के पीछे भी केवल यही शक्ति दिखाई देती है। लागत लेखा कीमत निर्धारण में, क्षति की जांच करने में, संसाधनों के नियंत्रण में, प्रक्रमों के प्रबंध में, निर्णयों के लिये आंकड़ों के प्रवाह में, सामाजिक दायित्वों को पूरा करने में और संगठन की लाभ संवृद्धि के लिये अवसरों को देने में सहायक होती है। इसलिये अधिकाधिक औद्योगिक प्रतिष्ठानों का लागत निर्धारण प्रणाली में विश्वास बढ़ता जा रहा है और वे इसे विभिन्न आर्थिक कार्यों के प्रबंध पर लागू कर रहे हैं।

1.3 लागत निर्धारण और लागत लेखांकन की परिभाषाएं

लागत निर्धारण (Costing) का तात्पर्य लागतें ज्ञात करने की प्रणाली और प्रक्रिया से है। इसके अन्तर्गत वे सिद्धान्त और नियम आते हैं जिन्हें निर्मित उत्पादों और प्रदान की गयी सेवाओं की लागत ज्ञात करने

के लिये प्रयोग में लाया जाता है। 'लागत लेखांकन (Cost Accounting) शब्द का तात्पर्य लागतों के लिये लेखांकन की प्रक्रिया है। इसकी शुरुआत सभी आय व व्यय के लेखन से होती है और अन्त लागतों को ज्ञात करने और नियंत्रित करने के लिये आवधिक विवरण और रिपोर्टें बनाने पर होता है। इस प्रकार 'लागत लेखांकन' एक अधिक व्यापक शब्द है जसमें लागत निर्धारण शामिल है। **तथापि व्यवहार में इन दोनों शब्दों को अन्तर्बदल करके प्रयोग किया जाता है।** व्हेलडन (Wheldon) ने 'लागत निर्धारण' और 'लागत लेखांकन' की परिभाषाओं में अन्तर्विष्ट विचारों को विस्तारित करके लागत निर्धारण की एक विस्तृत परिभाषा दी है जो इस प्रकार है:

लागत निर्धारण (लागत लेखा) व्ययों का वर्गीकरण करना, लेखन करना और उचित आबंटन करना है जिससे कि उत्पादों और सेवाओं की लागतें निर्धारित हो सकें और जिससे प्रबंध के मार्गदर्शन और नियंत्रण के लिये क्रमबद्ध आंकड़े उचित रूप में प्रस्तुत किये जा सकें।

लागत लेखांकन के विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं में, इंग्लैंड की इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट ऐंड मैनेजमेंट एकाउंटेंट्स (Institute of Cost and Management Accountants) द्वारा प्रकाशित शब्दावली में 'लागत लेखांकन' (Cost Accounting) और 'लागत लेखाविधि' (Cost Accountancy) में भी भेद किया गया और 'लागत लेखाविधि' की यह परिभाषा दी गई: "लागत लेखाविधि का तात्पर्य लागत निर्धारण और लागत लेखांकन के सिद्धान्तों, पद्धतियों एवं प्रविधियों का प्रयोग लागत नियंत्रण के विज्ञान, कला और व्यवहार में प्रयोग तथा लाभकारिता के निर्धारण के साथ-साथ प्रबन्धकीय निर्णयों के लिये सूचना प्रस्तुत करने से है।" लेकिन आजकल 'लागत लेखा विधि' शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता। अधिकांश लेखक 'लागत लेखांकन' शब्द का प्रयोग करते हैं और वें "लागत निर्धारण" शब्द के प्रयोग की भी सिफारिश नहीं करते। इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट ऐंड मैनेजमेंट एकाउंटेंट्स (Institute of Cost and Management Accountants) द्वारा प्रकाशित नवीनतम शब्दावली के अनुसार "लागत लेखांकन प्रबंध लेखांकन का वह भाग है जो बजट, मानक लागतों, क्रियाओं, प्रक्रियाओं, विभागों या उत्पादों की वास्तविक लागतों और विचरण के विश्लेषण, लाभकारिता या कोषों के सामाजिक उपयोग को संस्थापित करता है।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि :

- क) लागत लेखांकन लागतों के लेखांकन की एक प्रक्रिया है।
- ख) इसमें वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन से सम्बन्धित आय व व्यय समाविष्ट किये जाते हैं।
- ग) यह सांख्यिकीय आंकड़े प्रदान करता है जिनके आधार पर भविष्य के अनुमान तैयार किये जा सकते हैं।
- घ) यह उत्पादों और सेवाओं की लागतों को ज्ञात करने और नियंत्रित करने के आधार के रूप में कार्य करता है।
- ङ) इसमें (i) विश्लेषण, (ii) लेखन, (iii) बजट और मानकों की स्थापना, (iv) तुलना, और (v) रिपोर्ट लिखने संबंधी कार्य शामिल होते हैं।

बोध प्रश्न क

- 1 लागत निर्धारण से क्या तात्पर्य है?
- 2 लागत लेखांकन की परिभाषा दीजिये।
- 3 एक सिले सिलाये कपड़ों (ready-made garments) के कारखाने में खर्चों के चार ऐसे उदाहरण दीजिये जो लागत में शामिल होते हैं:

- क)
- ख)

- ग)
घ)

- 4 बताइये कि निम्नलिखित कथन **सही** हैं या **गलत** और अपने उत्तर की पुष्टि कारण सहित कीजिए।
- i) लागत लेखांकन को अनुमानों के लिये मूलभूत आंकड़े वित्तीय लेखांकन प्रणाली से प्राप्त होते हैं।
- ii) लागत नियंत्रण का अर्थ है कम्पनी को कम लाभ।
- iii) जब ग्राहक उचित कीमतों पर माल खरीदते हैं तो उन्हें अधिक संतुष्टि प्राप्त होती है।
- iv) यदि साधन दुर्लभ हैं तो उत्पादन लागत कम होगी।
- V) लागत लेखांकन एक विस्तृत शब्द है जिसमें लागत-निर्धारण शामिल होता है।
- vi) लागत लेखांकन प्रबंधकीय निर्णयों के लिये आंकड़े प्रदान करता है।

1.4 लागत लेखांकन के उद्देश्य

लागत लेखांकन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- 1 उत्पादों और सेवाओं की लागतें ज्ञात करना;
- 2 विक्रय मूल्य निश्चित करने या टेण्डर भरने में सहायक होना;
- 3 कुल लागत के विभिन्न तत्वों का विश्लेषण और वर्गीकरण करना;
- 4 क्षति (Wastage) के कारणों को जानना और इसे रोकने के लिये उचित उपचार करना;
- 5 विश्लेषण और तुलनाओं द्वारा लागतों को नियंत्रित करना;
- 6 प्रबंध को लागतों से सम्बन्धित सभी सूचना पहुंचाना और प्रबंधकीय निर्णय लेने में सहायता करना;
- 7 विभिन्न विभागों, शाखाओं, उत्पादों, इकाइयों, प्लांटों व मशीनों की सापेक्षिक कुशलताको आंकना और उनकी उत्पादितता को बढ़ाने के उपाय निकालना; तथा
- 8 उत्पादन, विक्रय और लाभ के अन्तरिम पुनर्विलोकन के लिये या भविष्य की क्रियाओं के नियोजन के लिये प्रबंध को जब और जैसे भी लागत विवरणों की आवश्यकता है उन्हें प्रदान करना।

इस प्रकार लागत लेखा के उद्देश्य इस तथ्य को सिद्ध करते हैं कि यह लेखांकन की एक आवश्यक शाखा है। यह उत्पादन लागत में मितव्ययता की कुंजी है और प्रबंध में कुशलता सुनिश्चित करने की एक आवश्यक तकनीक है।

1.5 लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में अन्तर

लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं:

लागत लेखांकन	वित्तीय लेखांकन
1 वस्तुओं या सेवाओं की लागत का पता लगाता है।	1 व्यवसाय के परिचालन परिणामों और वित्तीय स्थिति को प्रस्तुत करता है।
2 प्रबंध की सूचना सम्बन्धी आवश्यकताओंको पूरा करता है।	2 कम्पनी के बारे में वित्तीय सूचना, उसके अंशधारियों, लेनदारों, कर्मचारियों और पूरे समाज को प्रदान करता है।
3 इसके बाद बाह्य इ प्रणाली आवश्यक नहीं होती।	3 एक स्वतंत्र अंकेक्षण प्रणाली की आवश्यकता होती है ताकि यह निश्चित किया जा सके कि वित्तीय विवरण स्थिति का सही व उचित चित्र दर्शाते हैं।
4 व्यय को सामग्री लागत, श्रम लागत, स्थिर उपरिव्यय और परिवर्ती उपरिव्यय में वर्गीकृत करता है।	4 व्यापार की प्राप्तियों और भुगतानों से सम्बन्धित सभी लेन-देनों को डेबिट और क्रेडिट प्रविष्टियों में वर्गीकृत किया जाता है।
5 बच्चों को लागत शीट, प्रकम लेखा ठेका लेखाया किसी अन्य लेखा विवरण में दर्शाता है।	5 सारे लेन-देनों को दो वित्तीय विवरणों में संघटित करता है, में वित्तीय विवरण हैं: व्यापार और लाभ-हानि खाता और तुलन-पत्र।
6 कर-निर्धारण का आधार नहीं बनता क्योंकि यह कोई वित्तीय रिकार्ड नहीं है।	6 यह व्यापार के कर दायित्व को निर्धारित करने के आधार के रूप में कार्य करता है।
7 मानक लागत और वास्तविक लागत में अनुकूल और प्रतिकूल अन्तरों को जानने के लिये विचरण विश्लेषण (variance analysis) की आवश्यकता होती है।	7 व्यापार के प्रचालन के दौरान होने वाले केवल वास्तविक लेन-देनों का लेखन करता है।
8 निरन्तर अन्तराल पर लागत सम्बन्धी सूचना प्रस्तुत करता है।	8 वर्ष में एक या दो बार वित्तीय सूचना प्रस्तुत करता है।
9 विशिष्ट उत्पादों, शाखाओं, विभागों, कार्यों या प्रक्रिया पर लाभ या हानि पता लगाता है।	9 पूरे व्यापार के परिचालन परिणाम देता है।
10 लागत आकड़ों का उपयोग नियंत्रण करने और क्षति रोकने के लिये करता है और इन आंकड़ों की सहायता से भविष्य में परिचालन कुशलता को अधिकतम करता है।	10 पिछली लेखांकन अवधि में हुई मुख्य प्रवृत्तियों का परिकलन करने के लिये लेखांकन अनुपात का प्रयोग करता है।
11 भौतिक इकाइयों जैसे श्रम के घंटे, मशीन के घंटे आदि का भी हिसाब देता है।	11 लेखा पुस्तकों में लेन-देनों का लेखन केवल मौद्रिक इकाइयों में करता है।

सामान्य उद्देश्य: लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन के उद्देश्यों और तरीकों में अन्तर होने पर भी दोनों प्रणालियों का अपने संगठन की लगातार सहायता करने का सामान्य उद्देश्य है। वास्तव में, ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। अतः एक विकासशील उद्यम में दोनों प्रणालियां संगठन के लाभ के लिये कार्य करती हैं और व्यापार को सुचारू रूप से चलाने में योगदान देती हैं।

1.6 लागत लेखांकन के लाभ

लागत लेखा की आवश्यकता, इसका अर्थ व उद्देश्य तथा लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में अन्तर जानने के बाद आपके लिये लागत लेखांकन के लाभों की सूची बनाना और प्रबंध के लिये एक अमूल्य सहायक के रूप में इसके महत्त्व को समझना कठिन नहीं होना चाहिये।

लागत लेखा की एक प्रभावी और व्यवस्थित प्रणाली निम्नलिखित तरह से सहायक होती है:

- 1 उत्पादन, लागत, सामग्री, श्रम, स्टोर, प्लांट की क्षमता आदि के सम्बन्ध में निरंतरसूचना प्रदान करने में, जिससे उत्पादन के नियोजन में सहायता मिलती है।
- 2 उन अनुत्पादक क्रियाओं, हानियों, साधनों की क्षति, बेकार मशीन और अकुशलता के स्थल (क्षेत्र) को जानने में जिनके लिये शीघ्र उपचार करने की आवश्यकता है।
- 3 सही व विश्वसनीय लागत आंकड़ों के संकलन में।
- 4 बजटों को बनाने और व्यावसायिक पूर्वानुमान में।
- 5 मानकों की स्थापना और विचरण के विश्लेषण द्वारा परिचालन की कुशलता के मापन में।
- 6 विक्रय मूल्य निश्चित करने में।
- 7 विभिन्न अवधियों, उत्पादों, विभागों और फर्मों की लागतों की तुलना करने में।
- 8 पहले से लागतों और आगम का अनुमान लगाने में।
- 9 स्टॉक नियंत्रण और स्टॉक की आवधिक जाँच में।
- 10 निष्क्रिय क्षमता की और संस्थापित क्षमता (installed capacity) से कम पर काम करने की लागत की जानकारी में।
- 11 लागत व लाभ को बार-बार ज्ञात करने और उनके कारणों की विस्तार से जांच करने में।
- 12 तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर निर्णय लेने में और विभिन्न मामलों के लिये उचित नीतियों के प्रतिपादन में। ये मामले हैं:
 - i) उत्पादन का स्तर
 - ii) स्वयं बनाने या खरीदने का निर्णय
 - iii) पुराने उपकरण का प्रतिस्थापन या आधुनिकीकरण
 - iv) मंदी के दौरान उत्पादन बंद करना या जारी रखना
 - v) नये उत्पादों को बनाना या पुराने उत्पादों को हटा देना
 - vi) विशेष आर्डर को स्वीकार करना

vii) मशीन के स्थान पर श्रम का प्रतिस्थापन करना

लागत लेखांकन के ऊपर बताये गये लाभों के कारण इनका प्रयोग अब केवल विनिर्माण उद्योगों तक ही सीमित नहीं है। आजकल लागत लेखा का प्रयोग विभिन्न संस्थाओं जैसे अस्पतालों, परिवहन उपक्रमों, स्थानीय प्राधिकरणों, दफ्तरों बैंकों, शैक्षिक संस्थाओं आदि द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त, लागत लेखा उपभोक्ताओं के लिये भी बहुत लाभकारी है। उचित लागत निर्धारण प्रणाली के कारण उन्हें उत्पाद उचित कीमतों पर मिल जाते हैं। संगठन के कर्मचारियों के लिये भी लागत निर्धारण लाभप्रद है क्योंकि इससे उन्हें अच्छे काम के लिये प्रोत्साहन मिलता है तथा बोनस और मजदूरी की ऊंची दर मिलती है। निवेशकर्ताओं, बैंकों, ऋणदाताओं और अंशधारियों के लिये भी लागत निर्धारण सहायक है क्योंकि इससे कम्पनी की पिछली लाभकारिता और भविष्य की संभावनाओं का मूल्यांकन होता है। अंततः यह औद्योगिक क्रियाओं में कुशलता, संसाधनों की प्रभावी गतिशीलता, कोषों के संतुलित उपयोग और समय पर लक्ष्यों के प्रति के कारण पूरे देश के आर्थिक विकास के लिये लाभकारी होती है।

बोध प्रश्न ख

- 1 लागत लेखा के चार मुख्य उद्देश्य बताइये।
 - क)
 - ख)
 - ग)
 - घ)
- 2 लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में चार मुख्य अन्तर बताइये।
- 3 रिक्त स्थानों को भरने के लिये सबसे उपयुक्त विकल्प पर (✓) चिन्ह लगाइये।
 - i) लागत लेखांकन भविष्य की उत्पादन लागत.....।
 - क) ज्ञात कर सकता है
 - ख) का पूर्वानुमान लगा सकता है
 - ग) का विश्लेषण कर सकता है
 - घ) का आकलन कर सकता है
 - ii) लागत लेखांकन प्रबंध कोके लिए सूचना प्रदान करता है।
 - क) कर्मचारियों के कल्याण
 - ख) निर्णयों
 - ग) कुशलता
 - प) लाभकारिता
 - iii) लागत विवरण..... लेखों का एक भाग है।
 - क) प्रकाशित
 - ख) वैधानिक
 - ग) आन्तरिक
 - घ) कराधान
 - iv) लागत निर्धारणराशियों पर आधारित होता है।
 - क) आकलित
 - ख) वास्तविक
 - ग) सही
 - घ) प्रक्षेपित
 - v) लागत लेखे भी प्रबंध द्वारा
 - क) अंकक्षित किये जाने चाहिये

- ख) बनाये जाने चाहिये
- ग) सत्यापित किये जाने चाहिये
- घ) विश्लेषित किये जाने चाहिये

4 लागत लेखांकन के प्रमुख लाभों को सूचीबद्ध कीजिए।

1.7 लागत लेखा प्रणाली की स्थापना

संगठनों के बढ़ते हुए आकार और विविधता के कारण कोई एक प्रणाली प्रत्येक व्यवसाय के लिये उपयुक्त नहीं हो सकती। इसलिये, लागत लेखा के नियमों और प्रक्रियाओं का प्रत्येक संगठन की अपनी विशेषताओं और वातावरण के अनुसार प्रयोग करना होता है दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि किसी संगठन के लिये उपयुक्त बनाई गई लागत लेखा प्रणाली ही उसके सफल परिचालन में सहायता कर सकती है।

कोई लागत निर्धारण प्रणाली शुरू करने से पहले एक आरंभिक सर्वेक्षण करना उचित होगा जिससे कि (क) उत्पाद, (स) संगठन, (ग) विनिर्माण प्रक्रिया और (घ) विक्रय और वितरण विधियों के बारे में व्यवसाय की सही आवश्यकताओं का मूल्यांकन किया जा सके। इसके अतिरिक्त उसे यह भी निश्चित कर लेना चाहिये कि :

- i) मौजूदा संगठन में न्यूनतम विघ्न पड़े;
- ii) प्रणाली धीरे-धीरे लागू की जाए;
- iii) संगठन के लिये बनायी गयी लागत निर्धारण प्रक्रिया सुसम्बद्ध है और केवल अर्थपूर्ण ब्योरो का ही अध्ययन करती है;
- iv) प्रक्रिया सरल है और परिचालन करने में कम खर्चीली है;
- v) प्रणाली प्रबंध के विभिन्न स्तर के लिये आवधिक रिपोर्टें बनाने के योग्य है।

लागत लेखा की प्रणाली के संस्थापन से पहले जिन दो अन्य पहलुओं की जाँच करना आवश्यक है वे हैं:

- 1 व्यवसाय में लागत लेखा के मुख्य उद्देश्य क्या हैं ? उदाहरण के लिये, क्या इसे कीमतों को निश्चित करने के लिये शुरू किया जा रहा है या लागत नियंत्रण प्रणाली स्थापित करने के लिए या दोनों के लिये।
- 2 इस प्रणाली को शुरू करने की प्रक्रिया में क्या व्यावहारिक कठिनाइयाँ हैं?

1.7.1 संभावित कठिनाइयाँ

हमें लागत लेखा प्रणाली को शुरू करने में आने वाली कठिनाइयों का और इसके साथ-साथ इस बात का भी बोध होना चाहिये कि इन्हें दूर करना है। ये कठिनाइयाँ प्रायः निम्नलिखित होती हैं:

- 1 उच्चतम प्रबंध से अपर्याप्त समर्थन और कुछ अधिकारियों द्वारा प्रणाली का विरोध।
- 2 वित्तीय लेखांकन प्रणाली के परिचालन से सम्बद्ध कर्मचारियों द्वारा विरोध।
- 3 लागत लेखा प्रणाली से संभावित अतिरिक्त कार्य के कारण अन्य स्तरों पर रोष।

- 4 नयी प्रणाली को चलाने के लिये प्रशिक्षित व योग्य कर्मचारियों की कमी।
- 5 स्थापना की प्रक्रिया में भारी लागतें।

1.7.2 ध्यान देने योग्य बातें

लागत निर्धारण प्रणाली की स्थापना से पहले निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिये:

- 1 लागत लेखा प्रणाली के उद्देश्य
- 2 व्यवसाय की प्रकृति
- 3 प्रबंध के गुण
- 4 संगठन का आकार व प्रकार, प्राधिकार का क्षेत्र, सूचना के स्रोत और प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्टें
- 5 व्यवसाय के तकनीकी पहलू
- 6 संगठन और प्रणाली को सहयोग प्रदान करने में कर्मचारियों का आचार—व्यवहार
- 7 परिवर्ती व्ययों पर विभिन्न परिचालनों का प्रभाव
- 8 लागत और वित्तीय लेखों के मिलान की विधि और नियंत्रण लेखों द्वारा इन्हें लेखांकन की एक संघटित प्रणाली में विकसित करने की संभावनाएं
- 9 सूचना की आवश्यकताओं की मात्रा और सरलता से आंकड़े एकत्र करने की प्रक्रिया
- 10 उत्पाद की प्रकृति और इसके लिये उपयुक्त लागत लेखा प्रणाली
- 11 समर्थक कर्मचारी इस प्रणाली के महत्व को कहां तक समझ पाते हैं और नियमित रूप से आंकड़े एकत्र करने की प्रासंगिकता के बारे में उनमें कितनी चेतना जागृत की जाती है।

1.7.3 प्रणाली की सफलता

लागत लेता की एक प्रभावी प्रणाली की निम्नलिखित अपेक्षाएं हैं:

- 1 यह व्यवसाय की प्रकृति और आवश्यकताओं के लिये उपयुक्त है।
- 2 परिचालन में सरल और आसान है। इसके लिये मानके प्रारूपों का प्रयोग किया जाना चाहिये और सभी सम्बद्ध व्यक्तियों को प्रत्येक रिकार्ड और रिपोर्ट के उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिये।
- 3 इसे कर्मचारियों से पूरा सहयोग प्राप्त होता है।
- 4 यह लागत निर्धारण रिपोर्टों को बनाने और प्रस्तुत करने के लिये आवश्यक सूचना प्रदान करने में शीघ्रता और नियमितता निश्चित करती है।
- 5 यह वित्तीय लेखांकन प्रणाली से निकट से जुड़ी हुई है और लागत लेखों और वित्तीय लेखों से प्राप्त परिमाणों के मिलान को बनाती सरल बनाती है।
- 6 यह लागत नियंत्रण में प्रभावपूर्ण योगदान देती है।
- 7 यह वास्तविक परिणामों और अनुमानों की तुलना के लिए प्रावधान करती है।
- 8 प्रणाली में काफी लचीलापन है जिससे कि यह व्यवसाय की बदलती हुई स्थितियों या आवश्यकताओं के साथ आसानी से समायोजन कर सकती है।
- 9 लागत लेखा प्रणाली की संस्थापना और परिचालन की लागत इससे प्राप्त लाभो के

आधार पर न्यायसंगत है।

अतः लागत निर्धारण की जो प्रणाली संस्थापन के लिये एक संस्था में प्रस्तावित है वह सुनियोजित होनी चाहिये और इसे सावधानी पूर्वक शुरू करना चाहिये ताकि इसमें वांछित परिणाम प्रदान करने की पर्याप्त क्षमता हो। बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है प्रणाली किस तरीके से काम करती है क्योंकि इसी पर इसके द्वारा सर्वोत्तम लाभ प्राप्ति निर्भर करती है।

बोध प्रश्न ग

- 1 वे चार मुख्य कारक बताइये जिन पर आप संगठन में एक लागत लेखा प्रणाली की स्थापना के लिये ध्यान देंगे।
 - i)
 - ii)
 - iii)
 - iv)
- 2 किसी संगठन में लागत लेखा प्रणाली शुरू करते समय किन संभव कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- 3 निम्नलिखित कथनों का उत्तर **हाँ** या **नहीं** में दीजिये और अपने उत्तर की पुष्टि कारण सहित कीजिए।
 - i) लागत लेखा प्रणाली से जो सूचना उपलब्ध होती है वे व्यवसाय के प्रतियोगियों के लिये भी उपयोगी हो सकती है। हाँ / नहीं
 - ii) लागत लेखा की प्रभावी प्रणाली में श्रम की क्षति को रोकने की आवश्यकता नहीं होती। हाँ / नहीं
 - iii) लागत के रिकार्ड वित्तीय लेखों द्वारा दर्शाये जाने वाले परिणामों के सत्यापन में सहायक हो सकते हैं। हाँ / नहीं
 - iv) लागत लेखा की एक मानक प्रणाली होती है जो सभी प्रकार के संगठनों के लिये उपयुक्त है। हाँ / नहीं
 - v) लागत लेखा प्रणाली की लागत इससे प्राप्त होने वाले लाभों से समर्पित होनी चाहिये। हाँ / नहीं
 - vi) लागत लेखा प्रणाली वित्तीय लेखांकन प्रणाली से स्वतंत्र होनी चाहिये। हाँ / नहीं

1.8 सारांश

लागत लेखा लेखांकन की एक विशिष्ट शाखा है जिससे व्यवसाय द्वारा उत्पादित वस्तुओं और प्रदान की गयी सेवाओं की लागतों को ज्ञात किया जाता है व नियंत्रित किया जाता है। वित्तीय लेखांकन की सीमाओं और आधुनिक उद्यमों के प्रबंध में जटिलताओं के कारण इसकी आवश्यकता हुई। लागत निर्धारण से तात्पर्य उन सिद्धान्तों, विधियों और प्रणालियों से है जिनका प्रयोग लागते ज्ञात करने व उन्हें नियंत्रित करने के लिये और सूचना के प्रस्तुतीकरण के लिये किया जाता है जिससे कि प्रबंधकीय निर्णय लिये जा सकें। इसके मुख्य उद्देश्य हैं: (i) लागते ज्ञात करना, (ii) कीमतें निश्चित करना (iii) लागतों का नियंत्रण, और प्रबंधकीय प्रयोग के लिए लागत संबंधी आंकड़े प्रदान करना। लागत लेखांकन वित्तीय लेखांकन से जिन विषयों में भिन्न है वे हैं: (i) यह किसके लिये है, (ii) वे उद्देश्य जिन्हें प्राप्त करना है, (iii) लागत और लाभों का विश्लेषण, (iv) सूचना प्रस्तुत करने का ढंग, और (v) रिपोर्ट देने की अवधि।

किसी संगठन में लागत लेखा प्रणाली स्थापित करने के लिये यह निश्चित कर लेना चाहिये कि (i) यह व्यवसाय की प्रकृति के लिये उपयुक्त है, (ii) यह समझने में सरल और परिचालन में आसान है, (iii) यह धीरे-धीरे शुरू की गयी है, (iv) यह आवश्यक सूचना शीघ्र व नियमित रूप से प्रदान करती है, (v) यह मितव्ययी है, और (vi) यह लचीली है।

1.9 शब्दावली

आबंटन (Allocation): विभिन्न लागत केन्द्रों में व्यय का वितरण।

बजट (Budget): भविष्य की दी हुई अवधि के दौरान व्यय और/या आगम के बारे में आबंटनों के अनुमान।

लागत निर्धारण (Costing): लागतों को ज्ञात करने की प्रविधि और प्रक्रिया।

लागत शीट (Cost Sheet): एक विशेष अवधि के लिये विशेष उत्पाद या कार्य से सम्बन्धित लागतों के विभिन्न तत्त्वों को दर्शाने वाला विवरण।

लागत केन्द्र (Cost Centre): एक स्थान, व्यक्ति, उपकरण या विभाग जिसकी लागत ज्ञात की जा सके और नियंत्रण के लिये उसका प्रयोग किया जा सके।

प्रत्यक्ष व्यय (Direct Expenses): सामग्री व श्रम आदि पर किया गया व्यय जो उत्पादित मर्दों के साथ प्रत्यक्ष रूप से जाना जा सके।

स्थिर व्यय (Fixed Expenses): वे व्यय जो उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन से परिवर्तित नहीं होते।

निष्क्रिय क्षमता (Idle Capacity): एक उद्यम की अप्रयुक्त उत्पादन क्षमता।

संस्थापित क्षमता (Installed Capacity): एक उद्यम की कुल उत्पादन क्षमता।

परोक्ष व्यय (Indirect Expenses) : कार्य, प्रशासन, वितरण या विक्रय से सम्बन्धित उपरिव्यय जो उत्पादित मर्दों के साथ प्रत्यक्ष रूप से नहीं जाने जा सकते और इसलिये इन्हें किसी विवेकी आधार आबंटित करना होता है।

उपरिव्यय (Overheads): सभी प्रकार के परोक्ष व्यय।

क्वोटेशन (Quotation): न्यूनतम स्वीकार्य कीमत जो वस्तुओं और सेवाओं की सप्लाइ के लिये प्रस्तावित की गयी हो।

मिलान (Reconciliation): दो परिणामों के अन्तर के कारणों का पता लगाकर उनका मिलान करना और उचित समायोजनों द्वारा उन्हें मिलाना।

मानक (Standard): निष्पादन या लागत का पूर्व-निर्धारित स्तर जो पहले के अनुभव और वर्तमान स्थिति के यथार्थवादी मूल्यांकन पर आधारित है।

इकाई लागत (Unit Cost): कुल लागत को कुल उत्पादन से भाग करने पर प्राप्त राशि।

विचरण (Variance): मानक लागत और वास्तविक लागत में अन्तर।

परिवर्ती व्यय (Variable Expenses): उत्पादन के बढ़ने या घटने पर आनुपातिक रूप में बढ़ने या घटने वाले व्यय।

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

- क 3 (क) मजदुरी (ख) कपड़ा (ग) बटन (घ) पैकेज
4 (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) गलत (v) सही (vi) सही
- ख 1 (क) लागत ज्ञात करना (ख) लागत नियंत्रण (ग) कीमत निर्धारण
(घ) प्रबंध निर्णयों के लिये आंकड़े प्रदान करना
- 3 (i) घ (ii) ख (iii) ग (iv) क (v) ग
- ग 3 (i) नहीं (ii) नहीं (iii) हाँ (iv) नहीं (v) हाँ (vi) नहीं

1.11 स्वपरख प्रश्न

- 1 एक व्यावसायिक उद्यम में लागत लेखांकन की एक प्रभावी प्रणाली की आवश्यकता क्यों होती है?
- 2 'लागत लेखांकन' की परिभाषा दीजिये। इसके मुख्य उद्देश्य बताइये।
- 3 आधुनिक अर्थव्यवस्था में लागत लेखांकन का महत्व बताइये।
- 4 लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में भेद कीजिये।
- 5 एक विनिर्माण उद्यम को लागत लेखांकन के मुख्य लाभ क्या हैं?
- 6 एक बिस्कूट बनाने वाले कारखाने में आप लागत लेखा प्रणाली कैसे स्थापित करेंगे? ऐसी प्रणाली की स्थापना में आने वाली संभावित कठिनाइयाँ क्या हैं?
- 7 "वित्तीय लेखांकन प्रक्रियाएं इस प्रकार बनायी जाती हैं कि समय-समय पर लाभ या हानि ज्ञात हो सके लेकिन इस प्रणाली में महत्वपूर्ण कमियाँ और सीमाएँ हैं" विवेचन कीजिये।
- 8 लागत लेखांकन रिकार्ड एक उद्यम के व्यावसायिक प्रचालन के नियंत्रण और नियोजन में किस प्रकार सहायक होता है?

नोट: इन प्रश्नों से आपको इस इकाई को और अच्छी तरह से समझने में सहायता मिलेगी। उनके उत्तर देने का प्रयास कीजिए और पाठ्यसामग्री से पुष्टि कीजिए। लेकिन अपने उत्तर विश्वविद्यालय को मत भेजिए। ये सिर्फ आपके अपने अभ्यास के लिए दिए गये हैं।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

एम.एन. अरोड़ा : लागत लेखांकन (नई दिल्ली : एस. चांद एंड कम्पनी लि., 1989) अध्याय 5,6,7

एस.एन. महेश्वरी एवं एस.एन. मित्तल : लागत लेखांकन के मूल तत्व (दिल्ली : श्री महावीर बुक डिपो, 1989) अध्याय 7-11

एम.एल. ओसवाल एवं एन.के. महेश्वरी : लागत लेखांकन (जयपुर : रमेश बुक डिपो, 1991) अध्याय 8,9,10,12

ए.के. सक्सेना : लागत लेखांकन (नई दिल्ली : सुल्तान चंद एंड संस, 1991) अध्याय 5,6,7



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 लागत की संकल्पना तथा उसका परिकलन

इकाई की रूपरेखा

- 2.0 उद्देश्य
- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 लागत का अर्थ
- 2.3 लागतों का वर्गीकरण
 - 2.3.1 कार्यात्मक वर्गीकरण
 - 2.3.2 उत्पादों के साथ पहचान के आधार पर
 - 2.3.3 परिवर्तनशीलता के आधार पर
- 2.4 लागत की इकाई
- 2.5 लागत केन्द्र
- 2.6 लागत के तत्त्व
 - 2.6.1 सामग्री
 - 2.6.2 श्रम
 - 2.6.3 व्यय
- 2.7 कुल लागत के संघटक
- 2.8 लागत विवरण
- 2.9 लागत निर्धारण पद्धतियां
- 2.10 लागत लेखा की प्रविधियां
- 2.11 लागत लेखाकार की भूमिका
- 2.12 सारांश
- 2.13 शब्दावली
- 2.14 बोध प्रश्नों के उत्तर
- 2.15 स्वपरख प्रश्न

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- लागत की परिभाषा दे सकें,
- 'लागत की इकाई' और 'लागत के केन्द्र' नामक संकल्पनाओं को समझा सकें,
- लागतों का वर्गीकरण कर सकें,
- लागत के तत्त्वों का वर्णन कर सकें,
- लागत विवरण का प्रारूप दे सकें और कुल लागत के संघटकों को पहचान सकें, तथा
- लागत निर्धारण की विभिन्न पद्धतियों का वर्णन कर सकें और प्रत्येक पद्धति जिन उद्योगों पर लागू होती है उनका उल्लेख कर सकें।

2.1 प्रस्तावना

इकाई 1 में आपने लागत लेखा की प्रकृति और क्षेत्र, लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में अन्तर, और किसी संगठन में लागत लेखा प्रणाली को स्थापित करने के लाभ के बारे में पढ़ा है। आपने यह भी पढ़ा है कि लागत लेखा लागतों का परिकलन करने की प्रणाली और प्रक्रिया है। लेकिन इस प्रक्रिया को समझने के लिये कुछ संकल्पनाओं जैसे लागत, लागत की इकाई, लागत केन्द्र, लागतों के वर्गीकरण, लागतों के तत्त्व और कुल लागत के संघटकों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। इस इकाई में

मुख्यतया इन्हीं पहलुओं पर विचार किया गया है और किसी संगठन द्वारा एक निश्चित अवधि के दौरान उत्पादित प्रत्येक उत्पाद की लागत और लाभ का परिकलन करने के लिये जो लागत विवरण बनाया जाता है उसका प्रारूप दिया गया है। इस इकाई में लागत निर्धारण की विभिन्न पद्धतियों पर भी विचार किया गया है और बताया गया है कि प्रत्येक पद्धति किन उद्योगों के लिये उपयुक्त समझी जाती है।

2.2 लागत का अर्थ

लागत का अर्थ है किसी दी हुई वस्तु पर किया गया खर्च (वास्तविक या बोधक) या उसके कारण किया गया खर्च। दूसरे शब्दों में, लागत (i) वास्तविक या अनुमानित व्यय, (ii) प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष व्यय दर्शाती है, और (iii) यह किसी उपकार्य, प्रक्रिया, उत्पाद या सेवा से संबंधित होती है। जो व्यय लागत में आते हैं वे हैं: (क) सामग्री, (ख) श्रम, (ग) कारखाने के उपरिव्यय, (घ) प्रशासनिक उपरिव्यय, (ङ) विक्रय व वितरण के उपरिव्यय।

लागत एक व्यापक संकल्पना है। इसका बिल्कुल सही अर्थ तब तक नहीं पता लगता जब तक कि इसे उचित रूप से सीमित न किया जाए। इसलिए यह आवश्यक है कि वे जो लागत का परिकलन करते हैं और वे जो इसे विशेष निर्णय लेने के लिये आधार के रूप में प्रयोग करते हैं, दोनों ही लागत के अर्थ व इसके अन्तर्विषय की व्याख्या समान रूप में करें। लागत की मुख्य विशेषताएं हैं:

- 1 लागत शब्द तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक इसकी पहचान इसकी प्रकृति और श्रेणी के साथ न की जाए।
- 2 लागत प्रत्येक स्थिति में एक ही जैसी अन्तर्वस्तु नहीं दर्शाती है।
- 3 कोई भी लागत सच्ची, सुनिश्चित या सही नहीं होती, यह एक लचीली संकल्पना है, सभी परिस्थितियों में इसका एक ही अर्थ नहीं होता।
- 4 विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लागत का परिकलन विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है।
- 5 लागते समय, मात्रा, फर्म, पद्धति और उद्देश्य के साथ परिवर्तित होती हैं/रहती हैं।

इस प्रकार लागत का कोई स्थिर व सुनिश्चित अर्थ नहीं होता। यह व्याख्या के अनुसार बदल सकती है और जिस तरीके से तथा जिस उद्देश्य से इसका परिकलन किया जाता है उसके अनुसार भी बदल सकती है। जिस उद्देश्य के लिए और जिन स्थितियों के अन्तर्गत लागत का परिकलन किया गया है उसे दर्शाना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो यह अस्पष्ट हो सकती है और अलग-अलग व्यक्तियों के लिये इसके अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। अतः यह एक विशेष क्रिया या वस्तु से सम्बन्धित होनी चाहिये और उत्पादित वस्तुओं की मात्रा या इकाई या की गयी सेवाओं के लिये व्यक्त की जानी चाहिये।

लागत और हानि: आप 'लागत' और 'हानि' शब्दों में भी भेद कर सकते हैं। लागत व्यवसाय को कुछ लाभ प्राप्त कराने के लिये किये गये व्यय को दर्शाती है। यदि किसी व्यय से कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पाता तो इसे हानि माना जाता है। आग द्वारा नष्ट हुई सामग्री की लागत या हड़ताल के दौरान फोरमैन को दिया गया वेतन लागत नहीं माना जाता। ये व्यवसाय को होने वाले हानि के उदाहरण हैं।

2.3 लागतों का वर्गीकरण

हमारा बहुधा कई प्रकार की लागतों से वास्ता पड़ता है। जब तक हमें उनके अर्थ और उपयोगिता की पूरी तरह जानकारी न हो, यह संभव है कि हम उनके परिकलन, विश्लेषण, तुलना और नियंत्रण करने में कारगर न हो पाएं।

लागतों का वर्गीकरण करने के कई आधार हैं। ये हैं : (1) उन कार्यों के अनुसार जिनके बारे में ये हैं, (2) उपकार्यों, उत्पादों या सेवाओं के साथ इनकी पहचान के अनुसार, (3) उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन के साथ इनकी परिवर्तनशीलता के अनुसार, (4) उत्पाद या अवधि के साथ इनके सम्बन्ध के अनुसार, (5) इनकी नियंत्रणीयता के अनुसार, और (6) निर्णय लेने में इनकी प्रासंगिकता के अनुसार। शुरु की अवस्था में पहले तीन आधार महत्वपूर्ण समझे जाते हैं और, इसलिये, इन पर विस्तार से विचार किया गया है।

2.3.1 कार्यात्मक वर्गीकरण (Functional Classification)

किसी विनिर्माण संगठन में लागतों के वर्गीकरण का सबसे सामान्य आधार वे कार्य हैं जिनसे ये सम्बन्धित हैं क्योंकि इनमें से प्रत्येक कार्य के लिये लागत का परिकलन करना पड़ता है। इस आधार पर लागतों का वर्गीकरण चार श्रेणियों में किया जाता है: (i) विनिर्माण लागतें (उत्पादन लागतें), (ii) प्रशासनिक लागतें, (iii) विक्रय लागतें और (iv) वितरण लागतें।

विनिर्माण लागतें (Manufacturing Costs): विनिर्माण लागतों में वे सभी व्यय आते हैं जो उत्पादन प्रक्रिया में सामग्रियों को प्राप्त करने से लेकर तैयार उत्पाद की मूल पैकिंग (डिब्बाबंदी) तक किये जाते हैं। इसमें सामग्रियों की लागत श्रम की लागत, अन्य प्रत्यक्ष व्यय और कारखाने के उपरिव्यय शामिल होते हैं। इन्हें उत्पादन लागतें भी कहा जाता है।

प्रशासनिक लागतें (Administrative Costs): प्रशासनिक लागतों में वे सभी लागतें शामिल की जाती हैं जो संगठन के सामान्य प्रशासन और परिचालन के नियंत्रण के लिये लगायी जाती हैं। ऐसी लागतों के कुछ उदाहरण: कार्यालय के कर्मचारियों के वेतन, कार्यालय भवन का किराया, कार्यालय के फर्नीचर का मूल्यह्रास और मरम्मत इत्यादि हैं। वास्तव में, कोई भी वह व्यय जो प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन, विक्रय, वितरण, अनुसंधान या विकास से सम्बन्धित नहीं है वह प्रशासनिक लागतों का एक भाग होता है।

विक्रय लागतें (Selling Costs): विक्रय लागतें वे लागतें हैं जो माल के विक्रय के लिये लगायी जाती हैं। ऐसी लागतों के कुछ उदाहरण हैं – गोदाम एवं विज्ञापन पर लागतें, सेल्समैनों का वेतन आदि।

वितरण लागतें (Distribution Costs): वितरण लागतें वे लागतें हैं जो ग्राहक को तैयार माल भेजने में लगायी जाती हैं, इनमें परिवहन की लागतें भी शामिल होती हैं। ऐसी लागतों के कुछ उदाहरण हैं: पैकिंग, ढुलाई, बीमा, बिक्री पर भाड़ा आदि।

2.3.2 उत्पादों के साथ पहचान के आधार पर (On the Basis of Identifiability with Products)

इस आधार पर लागतें दो वर्गों में वर्गीकृत की जाती हैं: (i) प्रत्यक्ष लागतें, और (ii) अप्रत्यक्ष लागतें।

प्रत्यक्ष लागतें (Direct Costs): प्रत्यक्ष लागत वे व्यय हैं जिनका उत्पाद, उपकार्य या प्रक्रम (प्रक्रिया) के साथ सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से पहचाना जा सकता है। उदाहरण के लिये, प्रयोग की गयी सामग्री या काम पर लगाये गये श्रम की स्थिति में हम आसानी से ज्ञात कर सकते हैं कि ये किस उपकार्य या उत्पाद या प्रक्रिया से सम्बन्धित है। लेकिन भवन के किराये आदि खर्चों के लिये यह स्थिति नहीं होती क्योंकि

ये कारखाने में उत्पादित विभिन्न उत्पादों के लिये एक सामूहिक लागत हैं और किसी विवेकशील आधार पर इनका सभी उत्पादों में आबंटन करना पड़ेगा।

अप्रत्यक्ष लागते (Indirect Costs): प्रत्यक्ष लागते वें व्यय हैं जिनका किसी विशेष उत्पाद उपकार्य या प्रक्रम के साथ सम्बन्ध आसानी से नहीं पहचाना जा सकता। ये सामान्य और सामूहिक प्रकृति की होती हैं और कारखाने में विनिर्मित विभिन्न उत्पादों में इन्हें आबंटित करना होता है। ऐसी लागतों के कुछ उदाहरण हैं : कारखाने के भवन का किराया, उत्पादन मैनेजर का वेतन, चौकीदार की मजदूरी आदि। इन लागतों को किसी विवेकपूर्ण आधार पर विभिन्न उत्पादों में आबंटित करना होता है। इन्हें उपरिलागत (on cost) या उपरिव्यय (Overheads) कहते हैं और इन्हें कारखाने के उपरिव्यय, प्रशासनिक उपरिव्यय, विक्रय और वितरण उपरिव्यय में उपविभाजित किया जा सकता है।

2.3.3 परिवर्तनशीलता के आधार पर (On the Basis of Variability)

इस आधार पर लागतों का वर्गीकरण (i) स्थिर लागतों (ii) परिवर्ती लागतों, और (iii) अर्ध-परिवर्ती (या अर्ध-स्थिर लागतों) में किया जाता है।

स्थिर लागतें (Fixed Costs): वे लागतें जो उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन से प्रभावित नहीं होती, स्थिर लागतें कहलाती हैं। उदाहरण के लिये एक विशेष अवधि में हम एक विशेष उत्पाद की चाहे 10,000 इकाइयां उत्पादित करे या 15,000 इकाइयां, कारखाने के भवन का किराया या उत्पादन मैनेजर का वेतन वहीं रहेगा। अतः किराये या वेतन को स्थिर लागत माना जाता है। **लेकिन यह ध्यान रखिये कि स्थिर लागतें सदा के लिये स्थिर नहीं होती।** ये एक निश्चित उत्पादन क्षमता तक ही स्थिर रहती हैं। यदि उत्पादन क्षमता में परिवर्तन होता है जिससे अतिरिक्त भवन या उपकरण की आवश्यकता होती है तो ऐसी लागतें भी बढ़ जाएंगी।

परिवर्ती लागते (Variable Costs): वे लागतें जो उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन के प्रत्यक्ष अनुपात में बढ़ती या घटती हैं, परिवर्ती लागतें कहलाती हैं। उदाहरण के लिये मान लीजिये कि 10,000 इकाइयों के उत्पादन पर लगी सामग्री की लागत 1,50,000 रु, आती है। यदि उत्पादन बढ़ाकर 12,000 इकाइयां कर दिया जाता है (20% की वृद्धि) तो सामग्री की लागत बढ़कर 1,80,000 रु, हो जाएगी (20% की वृद्धि)। यह ध्यान दें कि उत्पादन की प्रति इकाई सामग्री लागत नहीं बदली है। यह उतनी ही रहती है यानि 15 रु. प्रति इकाई। लेकिन उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन से सामग्री की कुल लागत परिवर्तित हो जाती है।

अर्ध-परिवर्ती लागतें (Semi-variable Costs): वे लागतें जो उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन के साथ बढ़ती या घटती है लेकिन उसी अनुपात में नहीं जिस अनुपात में उत्पादन में परिवर्तन होता है, अर्ध-परिवर्ती लागतें कहलाती हैं। दूसरे शब्दों में, ये लागते अंशतः परिवर्तनशील होती हैं और अंशतः स्थिर होती हैं और इसलिये इन्हें 'अर्ध-स्थिर लागतें (semi-fixed costs) भी कहते हैं। मूल्यह्रास और मशीन की मरम्मत ऐसी लागतों के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। मशीन का मूल्यह्रास अंशतः समय के बीतने के कारण और अंशतः के प्रयोग से होता है। अतः जब उत्पादन बढ़ाया जाता है तो मूल्यह्रास की राशि तो बढ़ती है, लेकिन यह उसी अनुपात में नहीं बढ़ती जिस अनुपात में उत्पादन की मात्रा बढ़ायी जाती है। इसका दूसरा उदाहरण यह है कि जब विक्रय किये गये माल की मात्रा बढ़ती है तो सेल्समैन का पारिश्रमिक भी बढ़ सकता है। लेकिन ऐसी वृद्धि विक्रय में वृद्धि के प्रत्यक्ष अनुपात में नहीं होगी क्योंकि विक्रय पर उसका कमीशन तो बढ़ेगा लेकिन उसका वेतन वही रहेगा।

लागतों का स्थिर, परिवर्ती और अर्ध-परिवर्ती लागतों में वर्गीकरण उत्पादन क्रिया के विभिन्न स्तरों पर कुल लागत के आकलन में और विभिन्न प्रबंधकीय निर्णयों में बहुत सहायक होता है।

बोध प्रश्न क

- 1 'लागत' शब्द से आप क्या समझते हैं?
- 2 'लागत' और 'हानि' में भेद कीजिये।
- 3 अर्थ-परिवर्ती लागतों के तीन उदाहरण दीजिये।
- 4 प्रत्यक्ष लागतों और अप्रत्यक्ष लागतों में भेद कीजिये।
- 5 बताइये कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत और अपने उत्तर की पुष्टि कारण सहित कीजिए।
 - i) लागतों का परिकलन विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है।
 - ii) लागत शब्द का एक स्थिर, निश्चित व स्पष्ट अर्थ होता है।
 - iii) कारखाने के भवन का किराया एक परिवर्ती लागत है।
 - iv) सेल्समैन का वेतन एक स्थिर लागत है।
 - v) कारखाने के सभी व्ययों के कारखाने द्वारा निर्मित उत्पादों के साथ सम्बन्ध को प्रत्यक्ष रूप से पहचाना जा सकता है।
 - vi) अप्राप्य ऋण विक्रय लागतें हैं।

2.4 लागत की इकाई (Cost Unit)

आप जानते हैं कि लागत लेखा का एक मुख्य कार्य उत्पादन की प्रति इकाई लागत का परिकलन करना है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक आर्थिक क्रिया को ऐसी पहचानने योग्य इकाइयों में मापना पड़ेगा जो लागत निर्धारण का आधार बन सके। लागत निर्धारण के लिये ऐसी इकाइयां निम्नलिखित हैं :

- 1 उत्पाद की इकाई (उदाहरणार्थ प्रति पुस्तक लागत)
- 2 समय की इकाई (उदाहरणार्थ प्रति घंटा बिजली के प्रजनन की लागत)
- 3 वजन की इकाई (उदाहरणार्थ प्रति किलो बिस्कुट की लागत)
- 4 माप की इकाई (उदाहरणार्थ प्रति मीटर कपड़े की लागत या निर्माण की प्रति वर्ग फुटलागत)
- 5 सेवा की परिचालन इकाई (उदाहरणार्थ प्रति किलोमीटर बस चलाने की लागत)

इस प्रकार लागत की इकाई उत्पाद, सेवा या समय की इकाई है जिसमें लागतों का परिकलन किया जाता है या जिसमें यह व्यक्त किया जाता है। लागत की इकाई सामान्यतया उत्पाद की वह मात्रा होगी जिसकी कीमत ग्राहकों को बताई जाती है। फिर भी लागत की इकाई का चयन उपयुक्त होना चाहिये। सर्वप्रथम, इससे लागत का परिकलन सुविधाजनक हो जाना चाहिये। दूसरे, व्ययों को लागत की इकाइयों से जोड़ना सरल होना चाहिये। तीसरे, यह व्यवसाय की प्रकृति और प्रथा के अनुसार होनी चाहिये।

विभिन्न उत्पादों और सेवाओं की लागत की इकाई के कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं:

उत्पादन/क्रिया	लागत की इकाई
तार	प्रति मीटर

शक्ति (बिजली)	प्रति कि.वाट घंटा
टेलीफोन	प्रति कॉल
लोहा	प्रति टन/क्विंटल
यातायात	प्रति सवारी प्रति किलोमीटर प्रति किलोग्राम प्रति कि.मीटर
ईटें	प्रति हजार
सीमेंट	प्रति बोरी/प्रति टन
कागज	प्रति रिम/प्रति किलोग्राम
कम्प्यूटर	प्रति घंटा
छपाई	प्रति एक हजार छाप
कार	प्रति कार
पेट्रोल	प्रति लीटर
टैलीविजन	प्रति सैट
पेंसिल	प्रति दर्जन
सोना	प्रति ग्राम
पोत निर्माण	प्रति जहाज
नर्सिंग होम	प्रति बेड प्रति दिन

2.5 लागत केन्द्र (Cost Centre)

लागत केन्द्र एक स्थल, व्यक्ति या उपकरण की (मद या इनका समूह) है जिसके लिये लागत का परिकलन किया जा सकता है और जिसे लागत नियंत्रण के लिये प्रयोग किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में लागत केन्द्र निम्नलिखित में से कोई एक या एक से अधिक का संयोजन हो सकता है।

स्थान: कारखाना, कार्यालय, गोदाम, स्टोर, विक्रय डिपो आदि।

व्यक्ति: फोरमैन, सेल्समैन, ग्राहक आदि।

उपकरण: मशीन, कार, ट्रक, क्रेन आदि।

वास्तव में, पूरे संगठन को ऐसे विशिष्ट लागत केन्द्रों में विभक्त किया जा सकता है जो मिलकर कुल लागत में योगदान करते हैं। लागत केन्द्रों की पहचान निम्नलिखित कार्यों में हमारी सहायता करती है :

- 1 केन्द्र के अनुसार लागतों के परिकलन में
- 2 केन्द्र के अनुसार लागतों की आवधिक तुलना में

- 3 विचरण (variance) की मुख्य प्रवृत्तियां मालूम करने में
- 4 लागतों में अनावश्यक, अवांछनीय या अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव को रोकने के लिये नियंत्रण प्रणाली को लागू करने में।

लागत केन्द्र संगठन की एक सुविधाजनक इकाई है। यह परिचालनों को अलग-अलग करता है, क्रियाओं का सीमांकन करता है, और व्ययों का वितरण करता है जिससे प्रत्येक लागत केन्द्र के लिये उत्तरदायित्व निर्धारित करने में सहायता मिलती है।

लागत केन्द्रों के प्रकार: लागत केन्द्रों को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है:

- 1 प्रक्रिया लागत केन्द्र (परिचालन के क्रम पर आधारित)
- 2 उत्पादन लागत केन्द्र (कारखाने में नियमित उत्पादन के लिये)
- 3 परिचालन लागत केन्द्र (जहां उत्पादन प्रक्रिया में विभिन्न परिचालन होते हैं)
- 4 सेवा लागत केन्द्र (मुख्य उत्पादन की सहायक क्रियाएं)

इस प्रकार लागत केन्द्रों की पहचान या चयन उद्योग की प्रकृति और प्रतिरूप पर निर्भर करती है।

बोध प्रश्न ख

- 1 क्रिया/उत्पाद से उपयुक्त लागत की इकाई मिलायें :

<ol style="list-style-type: none"> i) यातायात ii) गृह निर्माण iii) फर्नीचर iv) विज्ञापन v) नर्सिंग होम vi) आईस क्रीम vii) कमीज 	<ol style="list-style-type: none"> क) प्रति वर्ग सेंटीमीटर ब) प्रति कार्य ग) प्रति अनुबंध घ) प्रति इकाई (एक) इ) प्रति बिस्तर प्रति दिन च) प्रति टन प्रति किलोमीटर छ) प्रति किलोग्राम
---	---
- 2 लागत की इकाई की परिभाषा दीजिये।
- 3 लागत केन्द्र से आप क्या समझते हैं?
- 4 लागत केन्द्रों की पहचान करने के उद्देश्य बताइये।

2.6 लागत के तत्त्व (Elements of Cost)

लागत के तीन मुख्य तत्त्व हैं: (1) सामग्री, (2) श्रम और (3) व्यय।

2.6.1 सामग्री (Materials)

सामग्री शब्द का तात्पर्य उन वस्तुओं से है जो कच्चे माल, संघटकों या उपभोज्यों के रूप में किसी उत्पाद के विनिर्माण में प्रयोग की जाती है। सामग्री प्रत्यक्ष हो सकती है या अप्रत्यक्ष।

प्रत्यक्ष सामग्री: वह सभी सामग्री जो किसी उत्पाद के विनिर्माण में कच्चे माल या संघटक के रूप में प्रयोग की जाती है, प्रत्यक्ष सामग्री कहलाती है चीनी के लिये गन्ना, सिले सिलाये वस्त्रों के लिये कपड़ा, कार के लिये टायर प्रत्यक्ष सामग्री के कुछ उदाहरण हैं। पैकिंग भी प्रत्यक्ष सामग्री की लागत की एक मद है।

अप्रत्यक्ष सामग्री: वह सामग्री जो उपभोज्य है जैसे कि स्नेहक तेल (lubricating oil), लेखन-सामग्री, मशीन के अतिरिक्त पुर्जे, उन्हें अप्रत्यक्ष सामग्री कहते हैं। ऐसी वस्तुएं तैयार उत्पाद का संघटक नहीं बनती।

2.6.2 श्रम (Labour)

सामग्री को तैयार माल में बदलने के लिये या व्यवसाय में विभिन्न कार्य करने के लिये काम पर लगाये गये श्रमिकों को श्रम कहते हैं। श्रम भी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष हो सकता है।

प्रत्यक्ष श्रम: जो श्रमिक प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं के उत्पादन में लगे होते हैं उन्हें प्रत्यक्ष श्रम कहते हैं। ये श्रमिक हाथ से उत्पादन करने वाले हो सकते हैं या मशीन पर उत्पादन करने वाले ऐसे श्रमिकों को दी जाने वाली मजदूरी प्रत्यक्ष मजदूरी या विनिर्माण मजदूरी कहलाती है।

अप्रत्यक्ष श्रम: उन श्रमिकों को, जो वस्तुओं के उत्पादन में आकस्मिक कार्य करने के लिये या कार्यालय में कार्य करने के लिये और विक्रय एवं वितरण के कार्यों के लिये लगाये जाते हैं, अप्रत्यक्ष श्रम कहते हैं ऐसे श्रमिकों के दीजाने वाली मजदूरी को 'अप्रत्यक्ष मजदूरी' कहते हैं।

2.6.3 व्यय (Expenses)

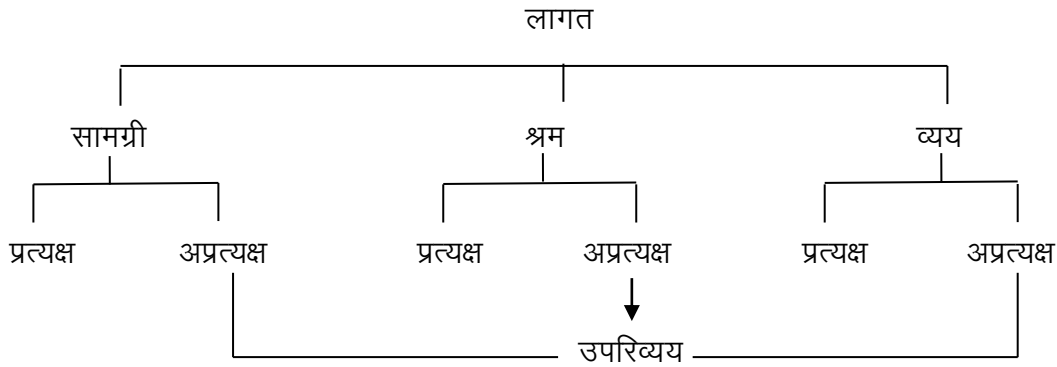
सामग्री व श्रम के अतिरिक्त अन्य सभी खर्च व्यय कहलाते हैं। व्यय भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हो सकते हैं।

प्रत्यक्ष व्यय: अन्य व्यय जो विशिष्ट रूप से एक विशेष उत्पाद, उपकार्य या सेवा पर किये जाते हैं, 'प्रत्यक्ष व्यय' कहलाते हैं। ऐसे व्यय के कुछ उदाहरण हैं: खरीदे गये माल पर ढुलाई उत्पादन रायल्टी, विशेष उपकरण का किराया, विशेष ड्राइंगों की लागत आदि। इन्हें 'प्रभार्य व्यय (chargeable expenses)' भी कहते हैं।

अप्रत्यक्ष व्यय: अप्रत्यक्ष सामग्री और अप्रत्यक्ष श्रम के अतिरिक्त वे सभी व्यय जो प्रत्यक्ष रूप से एक विशेष उत्पाद, उपकार्य या सेवा के कारण किये गये माने जाते हैं, 'अप्रत्यक्ष व्यय' कहलाते हैं। भवन का किराया, मशीन की मरम्मत, प्रकाश-व्यवस्था और तापन, बीमा आदि अप्रत्यक्ष के कुछ उदाहरण हैं।

लागत के विभिन्न तत्त्व एक चार्ट के रूप में चित्र 2.1 में प्रस्तुत किये गये हैं।

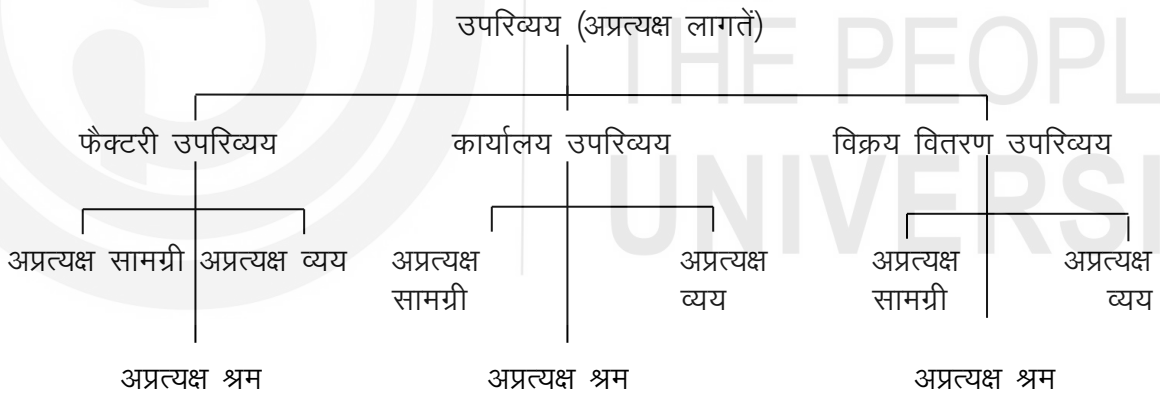
चित्र 2.1 लागत के तत्व



उपरिव्यय (Overheads) की संकल्पना: वे सभी सामग्री, श्रम और व्यय जिन्हें प्रत्यक्ष लागत के रूप में स्थापित नहीं किया जा सकता, 'अप्रत्यक्ष लागत' कहलाते हैं। अप्रत्यक्ष लागत के तीन तत्व हैं : अप्रत्यक्ष सामग्री, अप्रत्यक्ष श्रम और अप्रत्यक्ष व्यय। इन्हें सामूहिक रूप में उपरिव्यय या उपरिलागत' (on cost) कहते हैं।

उपरिव्यय को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है : (1) कारखाना (या विनिर्माण) उपरिव्यय, (2) कार्यालय या प्रशासनिक उपरिव्यय और (3) विक्रय और वितरण उपरिव्यय। इन्हें चित्र 2.2 में दिखाया गया है।

चित्र 2.2 उपरिव्यय



रूपान्तरण लागत (Conversion Cost): कच्चे माल को तैयार माल में रूपान्तरित करने की लागत को रूपान्तरण लागत कहते हैं। इसमें प्रत्यक्ष मजदूरी, प्रत्यक्ष व्यय और फैक्टरी उपरिव्यय शामिल होते हैं।

2.7 कुल लागत के संघटक (Components of Total Cost)

किसी उत्पाद की कुल लागत प्रत्यक्ष लागतों (इसे मूल लागत भी कहते हैं) और अप्रत्यक्ष लागतों (इसे उपरिलागत या उपरिव्यय भी कहते हैं) का योग है।

इस प्रकार कुल लागत के दो मुख्य संघटक (1) मूल लागत, और (2) उपरिव्यय हैं। अतः मूल लागत सभी प्रत्यक्ष लागतों को दर्शाती है और इसमें प्रत्यक्ष सामग्री, प्रत्यक्ष श्रम और अन्य प्रत्यक्ष व्यय शामिल

होते हैं। दूसरी ओर, उपरिव्यय में फ़ैक्टरी उपरिव्यय, कार्यालय उपरिव्यय और विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय शामिल होते हैं।

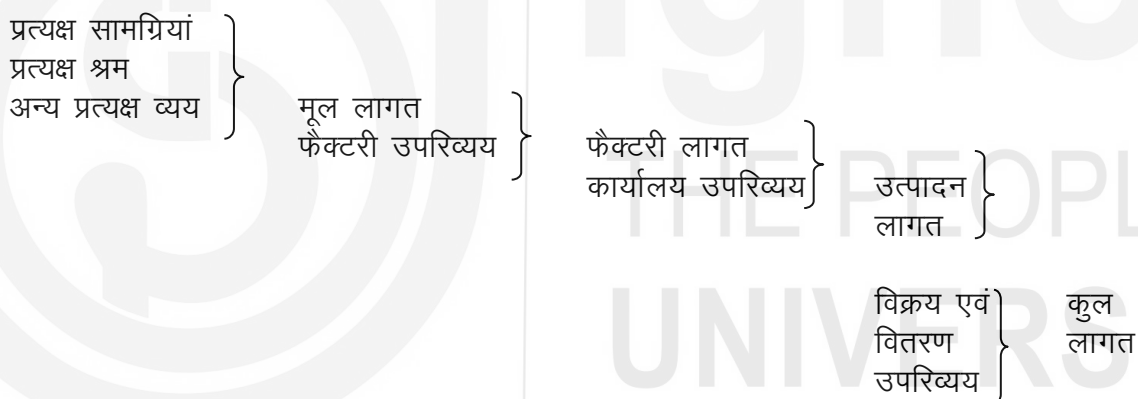
कुल लागत का गठन (Total Cost Build Up)

यदि हम विभिन्न लागतों को क्रमशः जोड़ें तो कुल लागत का निम्नलिखित ढाँचा बनता है :

- 1 प्रत्यक्ष सामग्री + प्रत्यक्ष श्रम + अन्य प्रत्यक्ष व्यय = मूल लागत (Prime Cost)
- 2 मूल लागत + फ़ैक्टरी उपरिव्यय = फ़ैक्टरी लागत (Works Cost)
- 3 फ़ैक्टरी लागत + कार्यालय और प्रशासनिक उपरिव्यय = उत्पादन लागत (Cost of Production)
- 4 उत्पादन लागत + विक्रय व वितरण उपरिव्यय = कुल लागत या विक्रय की लागत (Total Cost or Cost of Sales)

कुल लागत के गठन के ऊपर दिये गये ढाँचे को चित्र 2.3 में दर्शाया गया है।

चित्र 2.3 कुल लागत का गठन



इस प्रकार लागत के निम्नलिखित संघटक हैं:

- 1 मूल लागत (इसे प्रत्यक्ष लागत या प्रथम लागत कहते हैं)
- 2 फ़ैक्टरी लागत (इसे वर्क्स लागत भी कहते हैं)
- 3 उत्पादन लागत (इसे कार्यालय लागत भी कहते हैं)
- 4 कुल लागत (इसे विक्रय की लागत भी कहते हैं)

बोध प्रश्न ग

- 1 अन्य प्रत्यक्ष व्ययों के चार उदाहरण दीजिये।
- 2 अप्रत्यक्ष व्ययों के चार उदाहरण दीजिये।
- 3 प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मजदूरी में भेद कीजिये।
- 4 रिक्त स्थानों को भरिये :
 - i) प्रत्यक्ष व्यय +अन्य प्रत्यक्ष व्यय = मूल लागत
 - ii) मूल लागत += वर्क्स लागत
 - iii) वर्क्स लागत+ कार्यालय उपरिव्यय +
.....
 - iv) मूल लागत +++= विक्रय की लागत

2.8 लागत विवरण (Cost Sheet)

लागत विवरण एक ऐसा विवरण है जो कुल लागतों के विभिन्न संघटकों को दिखाता है और जो कीमत निर्धारण निर्णयों के लिये मार्गदर्शक और लागत नियंत्रण के लिए आधार का कार्य करता है।

यह लागत आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण है जिसमें लागत के विभिन्न तत्वों का एक वगीकृत तरीके से समावेश किया जाता है। इसमें दिये जाने वाले विवरण के महत्व के कारण इसे उचित तरीके से और निरन्तर अन्तराल (साप्ताहिक या नासिक) पर बनाया जाना चाहिये।

व्यवसाय की आवश्यकताओं के अनुसार लागत विवरण में जो संभव सूचनाएं शामिल की जानी चाहिये वे निम्नलिखित हैं:

- 1 उत्पाद लागत केन्द्र या लागत की इकाई का नाम
- 2 वह अवधि जिसके लिये विवरण है
- 3 उस अवधि का उत्पादन
- 4 कुल लागत के विभिन्न संघटकों का ब्योरा
- 5 मदों के अनुसार प्रति इकाई लागत
- 6 विक्रय किये गये माल के स्टॉक की स्थिति में परिवर्तन
- 7 लाभ या हानि की स्थिति

लागत विवरण का प्रारूप चित्र 2.4 में दिया गया है।

Figure 2.4 : Proforma of Cost Sheet

COST SHEET OF
for the month ending.....

		Outputunits	
		Total Rs.	Per Unit Rs.
Raw Materials Consumed:			
Opening stock of raw materials	xx		
Add: Purchases of raw materials	xx		
Less: Closing stock of raw materials	xxx		
Direct Labour		xxx	x

Other Direct Expenses		XX	X
PRIME COST		XXX	X
Factory Overheads:			
Indirect Material	XX		
Indirect Labour	XX		
Insurance on factory building & equipments	XX		
Other expenses of factory	XX		
Gross Factory/Works Cost	XXX		XX
Add : Opening Work-in-Progress	XX		
Less : Closing Work-in-Progress	XX		
Factory Cost or Works Cost		XXX	
Office & Administrative Overheads:			
Office Rent, Insurance,		XX	
Salaries, Office Expenses		XX	X
COST OF PRODUCTION/OFFICE COST		XXX	XX
(.....units)			
Add: Opening Stock of Finished Goods		XX	
(.....units)		XXX	
Less: Closing Stock of Finished Goods		XX	
(.....units)			
COST OF GOODS SOLD		XXX	XX
(.....units)			
Selling & Distribution Overheads :			
Packing, Showroom,			
Advertisement, Sale, Staff			
Salaries/Travelling Expenses			
COST OF SALES		XXX	XX
(.....units)			
PROFIT (LOSS)		X	X
SALES/SELLING PRICE		XXX	XX

उदाहरण 1 देखिये और अध्ययन कीजिये कि लागत निर्धारण आंकड़ों से लागत विवरण किस प्रकार बनाया जाता है।

Illustration 1

From the following particulars of a manufacturing firm, prepare the Cost Sheet showing (i) Prime Cost, (ii) Works Cost, (iii) Cost of Production, and (iv) Cost of Sales.

	Rs.
Stock of Materials on 1.1.2018	40,000
Purchase of Materials	11,00,000
Stock of finished goods on 1.1.2018 (5,000 units)	50,000

Productive wages	5,00,000
Finished goods sold (1,74,000 units)	24,36,000
Works overheads	1,50,000
Office expenses	1,00,000
Selling and Distribution expenses	1,74,000
Stock of materials on 31.12.2018	1,40,000
Stock of finished goods on 31.12.2018 (6,000 units)	60,000

Solution

Before preparing the Cost Sheet, we should work out the number of units produced during the year.

Closing Stock	6,000
Number of units sold	1,74,000
	<u>1,80,000</u>
Less: Opening Stock	5,000
Number of units produced	<u>1,75,000</u>

COST SHEET For the year ending 31.12.2018

Output 1,75,000 units

		Total Rs.	Per Unit Rs.
Raw Materials Consumed:			
Opening Stock	40,000		
Add: Purchases	11,00,000		
	<u>11,40,000</u>		
Less : Closing Stock	1,40,000	10,00,000	
Direct Wages		5,00,000	
Other Direct Expenses			
	PRIME COST	15,00,000	
Works Overheads		1,50,000	
	WORKS COST	16,50,000	
Office Overheads		1,00,000	
	COST OF PRODUCTION (1,75,000 units)	17,50,000	10.00
Add : Opening stock of Finished Goods (5,000 units)		50,000	

Less : Closing stock of Finished Goods (6,000 units)	18,00,000	
Cost of Goods Sold (1,74,000 units)	60,000	
Selling and Distribution Overheads	17,40,000	10.00
	1,74,000	1.00
COST OF SALES	19,14,000	11.00
PROFIT	5,22,000	3.00
SALES	24,36,000	14.00

2.9 लागत निर्धारण पद्धतियां (Methods of Costing)

यद्यपि सभी स्थितियों में लागत निर्धारण के मूल सिद्धान्त व प्रक्रियाएं ज्यों कि त्यों रहती हैं, लेकिन विभिन्न उद्योग अपने व्यवसाय की प्रकृति व विशेषताओं के कारण अपने उत्पादों और सेवाओं की लागतों का परिकलन करने के लिये अलग-अलग पद्धतियां अपनाते हैं। ये पद्धतियां संक्षेप में नीचे दी गई हैं।

उपकार्य लागत निर्धारण पद्धति (Job Costing): इस पद्धति के अन्तर्गत, लागतें प्रत्येक उपकार्य या वर्क-आर्डर के लिये अलग-अलग परिकलित की जाती हैं। यह छापाखाना, कार मरम्मत, ढुलाईघर (foundries), रंग-रोगन और सजावट जैसे उद्योगों के लिये उपयुक्त है, जिनमें प्रत्येक कार्य की अपनी विशेषता होती है।

ठेका लागत निर्धारण पद्धति (Contract Costing): यह पद्धति बड़े उपकार्यों, जिन्हें 'ठेके' कहा जाता है, में प्रयोग की जाती है। ठेके के काम में प्रायः भारी खर्च आता है और यह कार्य लम्बी अवधि तक चलता है और अलग-अलग स्थलों पर किया जाता है। अतः लागत के परिकलन और नियंत्रण के लिये प्रत्येक ठेके को एक पृथक् इकाई माना जाता है। ठेका लागत निर्धारण, (इसे सवधि-लागत निर्धारण भी कहते हैं) पोत-निर्माण भवन निर्माण, सड़क और पुल निर्माण जैसे उद्योगों के लिये सबसे अधिक उपयुक्त है।

बैच (समूह) लागत निर्धारण पद्धति (Batch Costing): जहां कार्य-आदेशों (work-orders) को समूहों में क्रमबद्ध किया जाता है और एक समूह में उत्पादित इकाइयाँ अपनी प्रकृति और डिजाइन में समरूप होती हैं, वहां प्रत्येक समूह को एक उपकार्य समझा जाता है और लागत निर्धारण के लिये उसे एक पृथक् इकाई की तरह माना जाता है। ऐसी स्थिति में लागत निर्धारण की जो पद्धति अपनायी जाती है उसे बैच (समूह) लागत निर्धारण पद्धति कहते हैं। यह सामान्यतया औषधि निर्माण, बेकरी (bakery), खिलौना बनाने जैसे उद्योगों में प्रयोग की जाती है।

इकाई लागत निर्धारण पद्धति (Unit Costing): इस पद्धति के अंतर्गत उत्पादन की लागतों का उत्पादन की उन इकाइयों का परिकलन किया जाता है जो सुविधाजनक हों। यह उन उत्पादों के लिए प्रयोग की जाती है जो निरन्तर विनिर्माण क्रियाओं द्वारा उत्पादित होते हैं और जिन्हें समरूप मात्रात्मक इकाइयों में व्यक्त किया जा सकता है। यह इंटों के भट्टे, खनन, सीमेंट बनाने, दुग्धशाला, आटे की मिलों आदि उद्योगों के लिए उपयुक्त है। इसे "एकल उत्पाद लागत निर्धारण" (single output costing) भी कहते हैं।

प्रक्रिया लागत निर्धारण पद्धति (Process Costing): कुछ उद्योगों में उत्पाद, उत्पादन के विभिन्न चरणों से गुजरता है जिन्हें प्रक्रियाएं (processes) कहते हैं और प्रत्येक प्रक्रिया पूर्ण-परिभाषित व भिन्न होती है। प्रत्येक प्रक्रिया का उत्पादन अगली प्रक्रिया के कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जा सकता है और

यह विपण्य (marketable) वस्तु भी हो सकता है। सूती कपड़ा मिल को लीजिए, इसमें अंतिम उत्पाद (कपड़ा) तीन विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरता है यानि कताई, बुनाई और अन्तिम रूप देना। कताई की प्रक्रिया का उत्पाद धागा होता है जो बुनाई की प्रक्रिया के लिए कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है और बुनाई की प्रक्रिया का उत्पाद 'अपरिष्कृत कपड़ा (coarse cloth) परिष्करण (finishing) प्रक्रिया को हस्तांतरित कर दिया जाता है। धागा और अपरिष्कृत कपड़ा अन्य कपड़ा मिलों को भी बेचा जा सकता है जिनके पास बुनाई या कताई की पर्याप्त सुविधाएं न हों। ऐसी स्थिति में प्रत्येक चरण पर लागत का परिकलन करना हो जाता है। इससे लागत की बाजार मूल्य से तुलना करने से और लागत नियंत्रण में सहायता मिलती है। प्रत्येक चरण पर लागत का परिकलन करने के लिए जो पद्धति अपनायी जाती है उसे प्रक्रिया लागत निर्धारण पद्धति कहते हैं। यह रासायनिक, रंग रोगन, कपड़ा और खाद्य-उत्पादों के उद्योगों में प्रयोग की जाती है।

परिचालन लागत निर्धारण पद्धति (Operating Costing): यह पद्धति बस, रेल, जल की आपूर्ति, नर्सिंग होम आदि सेवाओं की परिचालन लागत का परिकलन करने के लिये प्रयोग की जाती है। ऐसे संगठनों में लागत की ईकाई सेवा इकाई है। उदाहरण के लिये, बसों की लागत इकाई प्रति किलोमीटर प्रति यात्री होती है, नर्सिंग होम की लागत इकाई प्रति बेड प्रति दिन है। नवीनतम शब्दावली के अनुसार इसे सेवा लागत निर्धारण पद्धति (service costing) कहते हैं।

बहुसंख्यक लागत निर्धारण पद्धति (Multiple Costing): जहां बहुत से संघटकों (या पुर्जों) को मिलाकर एक उत्पाद बनाया जाता है जैसे कार, टाइपराइटर, टेलीविजन, रेफ्रिजरेटर आदि, वहां प्रत्येक संघटक के लिये और अन्तिम उत्पाद के लिये लागतों का परिकलन करना होता है। इसमें विभिन्न संघटकों के लिये अलग-अलग लागत निर्धारण पद्धति का प्रयोग करना पड़ सकता है और इसलिये इसे बहुसंख्यक या मिश्रित लागत निर्धारण पद्धति कहते हैं।

समरूप लागत निर्धारण पद्धति: एक ही उद्योग में बहुत सी फर्मोंद्वारा लागत निर्धारण की एक सामान्य पद्धति का प्रयोग करने की प्रथाको समरूप लागत निर्धारण पद्धति कहते हैं। इस प्रकार, यह लागत निर्धारण की एक अलग पद्धति नहीं है। यह तो केवल एक सामान्य पद्धति है जिसमें सहमत संकल्पनाओं सिद्धान्तों और मानक लेखाकन प्रथा का प्रयोग किया जाता है। यह फर्मों की दूसरे से तुलना करने और कीमतों को निश्चित करने में सहायता करती है।

यह ध्यान रखें कि लागत निर्धारण की दो मुख्य पद्धतियां हैं: (1) उपकार्य लागत निर्धारण पद्धति, और (2) प्रक्रिया लागत निर्धारण पद्धति ऊपर बतायी गयी अन्य पद्धतियां इन दो पद्धतियों की केवल रूपान्तर (variants) हैं।

2.10 लागत लेखा की प्रविधियाँ (Types of Costing)

लागत निर्धारण की पद्धति का तात्पर्य उत्पादों और सेवाओं को लागतों का परिकलन करने की प्रक्रिया और प्रथा से है जबकि लागत निर्धारण की प्रविधि का तात्पर्य लागत नियंत्रण और प्रबंधकीय निर्णयों के लिये लागतों के विश्लेषण और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि से होता है। लागत लेखा की जो प्रविधियां सामान्यतया प्रयोग की हैं, वे निम्नलिखित हैं:

सीमान्त लागत निर्धारण (Marginal Costing): यह लागत निर्धारण की वह प्रविधि है जिसमें स्थिर और परिवर्तनशील लागतों के भेद को महत्त्व दिया जाता है और एक उपकार्य या उत्पाद की लागत का परिकलन करते समय स्थिर लागतों पर ध्यान नहीं दिया जाता। इसमें केवल उत्पादन की परिवर्ती लागतों (variable costs) (प्रत्यक्ष सामग्री, प्रत्यक्ष श्रम, अन्य प्रत्यक्ष व्यय और परिवर्ती उपरिव्यय) का आबंटन किया जाता है। इसे परिवर्ती लागत के निर्धारण की प्रविधि भी कहते हैं।

अवशोषण निर्धारण पद्धति (Absorption Costing): यह लागत निर्धारण की वह प्रविधि है जिसके अन्तर्गत सारी लागतों को उत्पादन पर डाला जाता है यानि उत्पादों की लागत में स्थिर और परिवर्ती लागते दोनों ही शामिल की जाती हैं।

ऐतिहासिक लागत निर्धारण पद्धति (Historical Costing): यह लागत लेखांकन की वह पद्धति है जिसके अन्तर्गत लागत का परिकलन व्यय हो जाने के बाद ही किया जाता है। दूसरे शब्दों में, लेखांकन वास्तविक लागतों के आधार पर किया जाता है, पूर्वनिर्धारित या मानक लागतों के आधार पर नहीं। अधिकांश संगठन लागत लेखांकन की इस पद्धति को अपनाते हैं।

मानक लागत निर्धारण पद्धति (Standard Costing): यह लागत लेखांकन की वह पद्धति है जिसके अन्तर्गत लागतों को किन्हीं पूर्वनिर्धारित मानकों पर पहले से निर्धारित किया जाता है। ये मानक लागते कहलाती हैं। ये लागतों का वह स्तर दर्शाती हैं जिसे दी हुई परिचालन स्थितियों में प्राप्त करना चाहिये। मानक लागतों की वास्तविक लागतों से आवधिक तुलना की जाती है और इनमें विचरण के कारणों का विश्लेषण किया जाता है ताकि जहां आवश्यक हो वहां सुधार किया जा सके।

इस प्रकार कोई संस्था जिस प्रकार की क्रिया में लगी है उसकी प्रकृति के अनुरूप उपयुक्त लागत निर्धारण पद्धति अपनाने के बाद यह चयन करना होता है कि नियंत्रण करने के लिये लागत निर्धारण सम्बन्धित सूचना को किस तरह से प्रस्तुत किया जाए। 'सीमान्त लागत निर्धारण' या 'अवशोषण लागत निर्धारण' प्रविधि का प्रयोग किया जा सकता है और लागतों के परिकलन तथा लेखांकन के लिये 'वास्तविक लागतों' या 'मानक लागतों' को अपनाया जा सकता है।

2.11 लागत लेखाकार की भूमिका

लागत-निर्धारण का सिद्धान्त, वर्गीकरण, अवयव, विधियाँ और प्रकार समझने के पश्चात् लागत-लेखाकार की जिम्मेवारियां भी समझना आवश्यक है। लागत-लेखाकार की भूमिका वित्तीय लेखाकार से पूर्णतः भिन्न होती है।

लागत-लेखाकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह लागत-नियंत्रण, लागत में कमी और लागत-प्रबंधन के लिए आवश्यक कदम उठाये। यह आवश्यक है कि वह उत्पादन अथवा सेवा प्रदान करने की वास्तविक लागत निर्धारित करे।

लागत-लेखाकार मूल रूप से निम्नलिखित तीन प्रमुख गतिविधियों के लिए जिम्मेवार है:

1. लागत सम्बंधी निर्णयों में लागत रिपोर्ट जैसे विभिन्न उत्पादों की लागत, लाभदायिकता, व्यवधान, परिवर्तन-विश्लेषण आदि उपलब्ध करा कर उच्च प्रबंधन की सहायता करें।
2. विधिक-अनुपालन के लिए लागत रिकार्ड बना कर तैयार रखें। लागत रिकार्ड वित्तीय लेखा से भिन्न होते हैं।
3. वरिष्ठ प्रबंधन के आदेश के अनुसार लागत-नियंत्रण कार्यों को करें। लागत-लेखाकार द्वारा उपलब्ध कराई गई रिपोर्ट के आधार पर प्रबंधन लागत विभाग को विभिन्न दोष-निवारक उपाय चिन्हित कर लागू करने का आग्रह करता है।

किसी संगठन अथवा उत्पादन प्रतिष्ठान में उपर्युक्त जिम्मेवारियों का निर्वाह करने के लिए लागत-लेखाकार को कई प्रमुख भूमिकाएं अदा करनी पड़ती हैं जिनका वर्णन नीचे दिया गया है।

- अपने प्रतिष्ठान में लागत-लेखांकन विभाग की स्थापना करना।

- उन लागत सूचनाओं की आवश्यकता चिन्हित करना जो संगठन में विभिन्न स्तरों के प्रबंधन के लिए उपयोगी हो सकती हैं।
- एक ऐसी नियमावली विकसित करना जो लागत-लेखांकन विभाग के कार्यों को निश्चित करती है। नियमावली में विभिन्न फार्मों का प्रारूप भी दिया जाता है जिनका उपयोग सम्बंधित विभाग सूचना एकत्र करने और उसको उचित अधिकारियों को उपलब्ध कराने के लिए करते हैं। साधारणतः लागत-लेखांकन विभाग के कार्यों में (क) लागत-निर्धारण (ख) लागत की तुलना करना, (ग) लागत कम करना, (घ) लागत नियंत्रण और लागत की सूचना देना सम्मिलित हैं।

- (क) **लागत निर्धारण** : इसके लिए आवश्यक है कि लागतों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष वर्गों में वर्गीकृत किया जाये। इसके अतिरिक्त अप्रत्यक्ष लागतों (जो ऊपरी खर्च कहलाते हैं) को फ़ैक्ट्ररी ऊपरी खर्च, प्रशासनिक ऊपरी खर्च और बिक्री और वितरण ऊपरी खर्च में वर्गीकृत करना आवश्यक है।
- (ख) **लागत की तुलना करना**: किसी प्रतिष्ठान द्वारा उत्पादित सामान की लागत नियंत्रित करने के लिए यह आवश्यक है। यह कार्य लागत-लेखाकार द्वारा किया जाता है। लागत-लेखाकार लागत के सभी अवयवों का मानक निर्धारित करता है जिसके आधार पर तैयार उत्पाद की मानक लागत तय होती है। इस प्रकार निर्धारित मानक लागत की तुलना वास्तविक लागत से की जाती है जिसके आधार पर उनमें अन्तर ज्ञात होता है। लागत-लेखाकार इस अन्तर का कारण निश्चित करता है ताकि उसको समाप्त करने के लिए उचित कार्यवाही की जा सकें।
- (ग) **लागत कम करना** : परिस्थितियों के आधार पर विभिन्न लागत-विश्लेषणों का उपयोग करते हुए लागत-लेखाकार यह प्रयत्न करता है कि जहाँ तक सम्भव हो, लागत में कमी की जा सके। उदाहरण के रूप में इसके लिए कुछ निर्णय, जैसे कच्चा माल स्वयं उत्पादित करना अथवा खरीदना, नई भर्ती करना और मूलभूत सुविधाएं स्थापित करना अथवा कार्य को बाह्य-स्रोतों द्वारा सम्पादित करना और समय-समय पर कार्य संपादन का आकलन करना आदि आवश्यक होते हैं।
- (घ) **लागत-नियंत्रण और लागत की सूचना देना**: लागत-लेखाकार यह रिपोर्ट तैयार करता है कि लागत-नियंत्रण करने के लिए कुछ समय के लिए वैकाल्पिक रणनीति की आवश्यकता हो सकती है।

इन रिपोर्टों से किसी व्यवसायिक प्रतिष्ठान के कार्यकारी अधिकारियों को अपनी स्वयं की उपलब्धियों का आकलन करने में और उन कमजोर क्षेत्रों को चिन्हित करने में सहायता मिलती है जिनमें भविष्य में सुधार करना आवश्यक होता है।

बोध प्रश्न घ

1. लागत निर्धारण की दो मूल पद्धतियां बताइये।
2. निम्नलिखित उद्योगों के लिये आप लागत निर्धारण की कौन सी पद्धति अपनाने की सलाह देंगे।
 - i) पोत-निर्माण
 - ii) खिलौने बनाना
 - iii) तेल-परिष्करण-शाला (oil refinery)
 - iv) चीनी
 - v) ईंटों का भट्टा

vi)	पुल का निर्माण
vii)	सड़क परिवहन
viii)	फर्नीचर

3 लागत लेखाकार की जिम्मेवारियों को सूचीबद्ध कीजिए।

2.12 सारांश

लागत का परिकलन लेखांकन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। लागत, व्यय की वह राशि है (वास्तविक या काल्पनिक) जो एक उत्पाद, उपकार्य, प्रक्रिया या सेवा पर खर्च की गयी हो या उसके कारण खर्च हुई हो। लागत एक लचीली संकल्पना है। यह समय, मात्रा, फर्म, प्रविधि, या उद्देश्य के साथ परिवर्तित हो सकती है। इसमें और 'हानि' शब्द में भी भेद करना चाहिये। हानि का तात्पर्य ऐसे व्यय से है जो किसी लाभ प्राप्त किये बिना किया गया है।

लागतों का वर्गीकरण कई तरीकों से किया जा सकता है। कार्य से सम्बन्ध के आधार पर इन्हें विनिर्माण लागतों, प्रशासनिक लागतों, और विक्रय एवं वितरण लागतों में वर्गीकृत किया जाता है। उत्पादों के साथ इनकी पहचान के आधार पर इन्हें प्रत्यक्ष लागतों और अप्रत्यक्ष लागतों में वर्गीकृत किया जाता है। उत्पाद की प्रकृति के सम्बन्ध में इनकी परिवर्तनशीलता के आधार पर इन्हें स्थिर लागतों, परिवर्तनशील लागतों और अर्ध-परिवर्तनशील (या अर्ध-स्थिर) लागतों में वर्गीकृत किया जाता है।

लागत के परिकलन के लिये जिन दो संकल्पनाओं को आधार के रूप में प्रयोग किया जाता है वे हैं: (1) लागत की इकाई और (2) लागत केन्द्र। लागत इकाई एक उत्पाद की वह मात्रा है जिसमें लागतों का परिकलन किया जाता है, उदाहरण के लिये प्रति किलोग्राम, प्रति दर्जन, प्रति इकाई (एक) आदि। लागत केन्द्र का तात्पर्य संगठन को सुविधाजनक भागों में विभाजित करने से है। इन भागों में दायित्व निश्चित होने चाहिये इनमें विभिन्न लागतों का प्रारंभिक आवंटन व वितरण किया जा सकता है और इनका प्रयोग लागत नियंत्रण के लिये भी किया जा सकता है। यह एक विभाग, एक व्यक्ति या उपकरण की एक मद हो सकता है।

लागत के तीन मूल तत्व हैं: (1) सामग्री, (2) श्रम, और (3) व्यय। ये प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हो सकते हैं। अप्रत्यक्ष लागतों में 'अप्रत्यक्षसामग्री' अप्रत्यक्ष श्रम और अप्रत्यक्ष व्यय शामिल होते हैं और इन्हें उपरिव्यय कहते हैं। उपरिव्ययों को प्रायः फ़ैक्टरी उपरिव्यय, कार्यालय उपरिव्यय और विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय में वर्गीकृत किया जाता है।

कुल लागत के मुख्य संघटक मूल लागत, वर्क्स लागत उत्पादन लागत और विक्रय की लागत हैं। ये वास्तव में कुल लागत निर्धारित करने की अवस्थाएं हैं और इनसे नियंत्रण सरल हो जाता है।

लागत निर्धारण की विभिन्न पद्धति ये हैं: (1) उपकार्य लागत निर्धारण पद्धति, (2) ठेका लागत निर्धारण पद्धति, (3) बैच (समूह) लागत निर्धारण पद्धति, (4) इकाई लागत निर्धारण पद्धति, (5) प्रक्रिया लागत निर्धारण पद्धति (6) परिचालन लागत निर्धारण पद्धति, (7) बहुसंख्यक लागत निर्धारण पद्धति, और (8) समरूप लागत निर्धारण पद्धति। प्रत्येक संगठन वह पद्धति अपनाता है जो उसके उत्पादों की प्रकृति और प्रयोग की गयी उत्पादन प्रविधि के लिये उपयुक्त है।

लागत लेखाकार की भूमिका और जिम्मेवारियाँ वित्तीय लेखाकार से भिन्न होती हैं। उसकी भूमिका लागत विभाग की स्थापना से प्रारम्भ होती है जिसके अन्तर्गत लागतों को नियंत्रित करने और उनका प्रभावी उपयोग करने के लिए लागत रिपोर्ट तैयार की जाती है।

2.13 शब्दावली

रूपान्तरण लागत (Conversion Cost): सामग्री को अन्तिम उत्पादों में रूपान्तरित करने की लागत। इसमें प्रत्यक्ष श्रम, प्रत्यक्ष व्यय और फैक्टरी उपरिव्यय आते हैं।

लागत केन्द्र (Cost Centre): लागत निधरण के लिये एक सुविधाजनक भाग जिस पर विभिन्न व्ययों का प्रारंभक आबंटन व विभाजन किया जा सकता हो।

विक्रय की लागत (Cost of Sales): दर और वितरण व्यय को मिलाकर उत्पाद की कुल लागत।

लागत की इकाई (Cost Unit): वह मात्रा जिसमें एक उत्पाद की लागत का परिकलन किया जाता है।

मूल लागत (Prime Cost): सामग्री और भ्रम की लागत जिसमें अन्य प्रत्यक्ष रूपय भी शामिल होते हैं।

अर्ध-परिवर्ती लागत (Semi-Variable Cost): वे व्यय जो उत्पादन में परिवर्तन के साथ परिवर्तित तो होते हैं लेकिन उसी अनुपात में नहीं।

मानक लागत (Standard Cost): एक चुनी हुई अवधि के लिये और कार्य की निर्धारित दशाओं में सामग्री, श्रम और उपरिव्यय के लिये तकनीकी अनुमानों पर आधारित एक पूर्व निश्चित लागत।

वर्क्स लागत (Works Cost): मूल लागत + फैक्टरी उपरिव्यय।

2.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

क	5	i) सही ii) गलत iii) गलत iv) सही v) गलत vi) सही
ख	1	i) च ii) ग iii) ख iv) क v) ड vi) छ vii) घ
ग	4	i) प्रत्यक्ष मजदूरी ii) फैक्टरी उपरिव्यय iii) उत्पादन लागत iv) फैक्टरी उपरिव्यय, कार्यालय उपरिव्यय विक्रय और वितरण उपरिव्यय।
घ	2	i) ठेका लागत निर्धारण पद्धति ii) बैच लागत निर्धारण गर्दात iii) प्रक्रिया लागत निर्धारण पद्धति iv) प्रक्रिया लागत निर्धारण पद्धति v) इकाई लागत निर्धारण पद्धति vi) ठेका लागत निर्धारण पद्धति vii) परिचालन लागत निर्धारण पद्धति viii) उपकार्य लागत निर्धारण पद्धति

2.15 स्वपरख प्रश्न

- 1 'लागत केन्द्र' की परिभाषा दीजिये। उचित लागत केन्द्रों के चुनाव के महत्व का विश्लेषण कीजिये।
- 2 हमें 'लागत' के अर्थ को सीमित करने की आवश्यकता क्यों होती है?

- 3 'लागतों को उनकी प्रकृति और विशेषताओं के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है।' इस कथन को स्पष्ट कीजिये और स्थिर, परिवर्ती और अर्ध-परिवर्ती लागतों का अर्थ बताइये।
- 4 लागत निर्धारण की विभिन्न पद्धतियां क्या हैं? वे उद्योग बताइये जिनमें इन्हें लागू किया जा सकता है।
- 5 लागत निर्धारण की निम्नलिखित पद्धतियों की मुख्य विशेषताएं बताइये और बताइये कि ये किस उद्योग के लिये उपयुक्त होंगी :
- क) प्रक्रिया लागत निर्धारण पद्धति
ख) उपकार्य लागत निर्धारण पद्धति
ग) उत्पादन लागत निर्धारण पद्धति

- 5 निम्नलिखित आंकड़े Rising Star Co. के बारे में हैं:

	रु
मजदूरी	3,000
फैक्टरी व्यय	4,000
कार्यालय व्यय	5,000
सामग्री	6,000
विक्रय व्यय	3,000
वितरण व्यय	3,000
विक्रय	24,000
उत्पादन	2,000 इकाइयां
विक्रय की गयी इकाइयां	1,500 इकाइयां

निम्नलिखित का परिकलन कीजिये :

- क) मूल लागत (prime cost)
ख) वर्क्स लागत (works cost)
ग) उत्पादन लागत (cost of production)
घ) कुल लागत
इ) प्रति इकाई लागत
च) इस अवधि में लाभ
छ) प्रति इकाई लाभ

(उत्तर: क) 9,000 रु. ख) 13,000 रु. ग) 18,000 रु. घ) 24,000 रु.
ड.) 12 रु. च) 12,000 रु. छ) 3 रु.

नोट: इन प्रश्नों से आपको इस इकाई को और अच्छी तरह से समझने में सहायता मिलेगी। उनके उत्तर देने का प्रयास कीजिए और पाठ्यसामग्री से पुष्टि कीजिए। लेकिन अपने उत्तर विश्वविद्यालय को मत भेजिए। ये सिर्फ आपके अपने अभ्यास के लिए दिए गये हैं।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

एम.एन. अरोड़ा : लागत लेखांकन (नई दिल्ली : एस. चांद एंड कम्पनी लि., 1989) अध्याय 5,6,7

एस.एन. महेश्वरी एवं एस.एन. मित्तल : लागत लेखांकन के मूल तत्व (दिल्ली : श्री महावीर बुक डिपो, 1989) अध्याय 7-11

एम.एल. ओसवाल एवं एन.के. महेश्वरी : लागत लेखांकन (जयपुर : रमेश बुक डिपो, 1991) अध्याय 8,9,10,12

ए.के. सक्सेना : लागत लेखांकन (नई दिल्ली : सुल्तान चंद एंड संस, 1991) अध्याय 5,6,7



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY